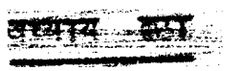

`गोदान` की समस्याएँ —

प्रेमचंदजी ने अपने अधिकांश उपन्यासों में ग्राम समस्या को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। वास्तव में प्रेमचंदजी का साहित्य ग्रामों की आर्थिक विपन्नता में ग्रस्त, नग्न-अर्धनग्न, भूखे-प्यासे, मृत्यु के मुख में पडे, जीवन की चाह को ललकारते हुए असंख्य नर-नारियों की करुण मर्मस्पर्शी कहानी है।

`गोदान` का होरी कृषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। उसके जीवन की समस्याएँ ग्राम की समस्याएँ हैं, जो `गोदान` में उभरी हैं। प्रेमचंदजी समस्यामूलक उपन्यासकार हैं। ग्राम की जितनी समस्याएँ हैं, वे होरी के जीवन में मूर्त होकर आयी हैं। ये परम्पराएँ पूरे ग्रामीण समाज में व्याप्त हैं। ग्राम की समस्याएँ युग-परिस्थितियों की देन है — यह सत्य होते हुए भी यह भुलाया नहीं जा सकता कि इन समस्याओं के मूल में स्वयं ग्रामीण जनता किसी न किसी रूपमें स्वयं उत्तरदायी है। प्रेमचंदजी ने जहाँ इन परिस्थितियों का व्यापक विस्तृत चित्रण किया है, जो ग्राम की विभिन्न समस्याओं को उत्पन्न करती हैं, वहाँ उन समस्याओं का समाधान भी दिया है —

`प्रेमचंद ने ग्रामीण समाज का व्यापक चित्रण करते हुए उसके विविध पक्षों पर विचार किया है। ग्राम्य जीवन से सम्बन्धित समस्याओं के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पहलुओं पर विचार करते हुए प्रेमचंद जी ने उसका आदर्शवादी परंतु व्यावहारिक निदान प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। प्रेमचंद की विविध औपन्यासिक कृतियाँ भारतीय ग्राम्य श्री का विविध रूपात्मक चित्रण प्रस्तुत करती हैं। ग्रामीण जीवन का चित्रण करते हुए प्रेमचंद ने भारतीय कृषक की दारुण स्थिति का परिचय दिया है। विडम्बना यह है कि कृषक ही अपने प्राण देकर दूसरों के लिए अन्न उपजाता है और स्वयं उन्हीं के द्वारा शोषित होता है।`[१]

---

१ प्रतापनारायण टंडन - प्रेमचंद - पृ.१०५-१०६, सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाडा, दरियागंज, दिल्ली-६ संस्करण - १९७८

नौकरशाही —

प्रेमचंदजी ने अपनी अनेक रचनाओं में सरकार के स्वरूप का केवल चित्रण ही नहीं किया अपितु उसे अनुभवगत रूप में भी उपस्थित किया है। किसानों का शोषण करनेवाले सरकारी स्वरूप को स्पष्ट कर दिया है। सरकार व्दारा जो किसानों का शोषण होता है —

` इस प्रक्रिया में उन्होंने हाकिम,कचहरी,पुलिस और तहसील की कार्य पध्दति को चित्रित किया है। अंग्रेज इन्हीं के माध्यम से किसानों का शोषण करते हैं। लेकिन ये राजकर्मचारी माध्यम मात्र नहीं हैं, बल्कि इनका भी अपना अलग अस्तित्व है। प्रेमचंद ने इनकी दोहरी और जटिल भूमिका को स्पष्ट किया है।`[१]

` किसानों का परिचय जिन सरकारी कर्मचारियों से होता है, प्रेमचंदजी ने उन्हीं कर्मचारियों का चित्रण विस्तार से किया है। जिन कर्मचारियों को किसान नहीं जानते,उनका चित्रण प्रेमचंद भी नहीं करते। सरकारी कर्मचारियों से किसानों का सामना या तो कचहरी में होता है, या गाँवों में होनेवाले हाकिमों के दौरे में होता है, या फिर पुलिस के रूपमें होता है। इसके अलावा पटवारी के रूप में एक कर्मचारी गाँव में निवास भी करता है। प्रेमचंद ने इन सबके स्वतंत्र व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए भी किसानों के साथ उनके संबंध पर ज्यादा ध्यान केंद्रित किया है।`[२]

` गोदान` में प्रेमचंदजी ने जमींदार रायसाहब के कर्मक्षेत्र का वर्णन किया है, उससे हमें स्वराज्य आन्दोलन की प्रकृति और उससे प्रेमचंदजी के मतभेदों

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१८६
वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१८६
वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

का पता चलता है। पिछले सत्याग्रह संग्राम में रायसाहब ने भाग लिया था और जेल भी हो आये थे, अत: किसानों के श्रध्दा के पात्र बने हुए थे। फिर भी --

' यह नहीं कि उनके इलाके में असामियों के साथ कोई खास रियायत की जाती हो, या डाँड या बेगार की कडाई कुछ कम हो, मगर यह सारी बदनामी मुख्तारों के सिर जाती थी।'[१]

' गोदान' में प्रेमचंदजी ने रायसाहब के घर महफिल करवायी है जिसमें शहर के रईस, उद्योगपति, बुध्दिजीवि और बडे सरकारी कर्मचारी आते हैं। दर्शन के अध्यापक मि.मेहता इसी अवसर पर कहते हैं --

' मैं चाहता हूँ, हमारा जीवन हमारे सिध्दान्तों के अनुकूल हो। आप कृषकों के शुभेच्छु हैं, उन्हें तरह-तरह की रियायत देना चाहते हैं, जमींदारों के अधिकार छीन लेना चाहते हैं, बल्कि उन्हें आप समाज का श्राप कहते हैं, फिर भी आप जमींदार हैं, वैसे ही जमींदार जैसे हजारों और जमींदार हैं। अगर आपकी धारणा है कि कृषकों के साथ रियायत होनी चाहिए, तो पहले आप खुद शुरु करें -- काश्तकारों को बगैर नजराने लिये पट्टे लिख दें, बेगार बन्द कर दे, इजाफा लगान को तिलांजलि दे दे, चरावर जमीन छोड दे। मुझे उन लोगों से जरा भी हमदर्दी नहीं है, जो बातें तो करते हैं कम्युनिस्टों की-सी, मगर जीवन है रईसों-का सा, उतना ही विलासमय, उतना ही स्वार्थ से भरा हुआ।'[२]

' आलोच्य काल में हाकिम और अमलों के अत्याचार जमींदार के शासन का एक अंग था। जमींदारों के नीचे कारिंदे थे, जिनका लगान वसूली में महत्वपूर्ण स्थान था। नालिस और कुर्की से किसानों को तंग और तबाह कर देना इनका काम था। ऐसे कारिंदे और हाकिम के चपरासियों का ऐसा रुतबा था कि वे किसान या व्यवसायी के यहाँ से अपनी जरुरत की चीज उठा ले जाते, तो इनकी हिम्मत

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१३, सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.४६ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

नहीं होती कि वे उसका दाम माँगने के लिए अड सक्ते । हाकिम अपना रोब कायम रखने के लिए कभी-कभी अपना दमन चक्र और तेज कर देते ।'[१]

' जमींदार और महाजन वर्ग जनता के शोषक ही नहीं वरन् प्रेमचंदजी की दृष्टि में अँग्रेजी राज के दलाल थे ।'[२]

' गोदान' में पुलिस की निरंकुशता की एक झलक दिखायी गयी है । थानेदार होरा के घर की तलाशी लेना चाहता है और किसान तलाशी को बेइज्जती समझाता है । होरी रिश्वत देने तैयार हो जाता है । इसी समय धनिया का नाटकीय प्रवेश होता है और वह यह स्पष्ट कर देती है कि सरकारी अधिकारी किस बहाने किसान को लूटते हैं —

' मैं दमडी भी न दूँगी , चाहे मुझे हाकिम के इजलास तक ही चढना पडे । हम बाकी चुकाने को पचीस रुपए माँगते थे, किसी ने न दिया । आज अँजुली भर रुपए ठनाठन निकाल के दे दिये । मैं सब जान्ती हूँ । यहाँ तो बाट बखरा होनेवाला था, सभी के मुँह मीठे होते । ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसनेवाले । सूद-ब्याज, डेढी-सवाई, नजर-नजराना, घूस-घास जैसे भी हो, गरीबों को लूटो ।'[३]

इधर मिल खुल गया । किसानों की खडी फसल खरीद ली गयी । रुपये के वक्त महाजन मिल वालों से मिल गए और रुपये पहले ही ले लिये । पटेश्वरी बचे हुए रुपये ले रहे थे । शोभा ने जब अनाकनी की तो पटेश्वरी बोला —

' तुम रुपये दोगे शोभा, और हाथ जोडकर और आज ही । हाँ, अभी जितना चाहो, बल्क लो । एक रपट में जाओगे छ: महीने को, पूरे छ: महीने को,

---

१ डॉ.राजेन्द्र पंजियार - हिन्दी कथा साहित्य पूर्व परिच्छेद - पृ.१२९ अंकुर प्रकाशन, १ । ३०९७, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२, प्रथम संस्करण-१९८५

२ डॉ.कलावती प्रकाश - महासमरोतर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन - पृ.२८, श्याम प्रकाशन, फिल्म कलोनी, जयपुर-२ प्रथम संस्करण - १९८७

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१७, सरस्वती प्रेस, २ । ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

न एक दिन बेस, न एक दिन कम। यह जो नित्य जुआ खेलते हो, वह एक रपट में निकल जायगा। मैं जमींदार या महाजन का नौकर नहीं हूँ, सरकार बहादुर का नौकर हूँ, जिसका दुनिया भर में राज है और जो तुम्हारे महाजन और जमींदार दोनों का मालिक है।[१]

`गोदान' तक की रचना यात्रा में प्रेमचंद में बहुत परिवर्तन हुए हैं, लेकिन पुलिस की कार्यपध्दति में कोई परिवर्तन नहीं होता। `गोदान' के थानेदार पंचों को धमकाते है।`[२]

`तुमने अभी अन्धेर नहीं देखा। कहो तो वह भी दिखा दूँ ? एक-एक को पाँच-पाँच साल के लिए भेजवा दूँ। यह मेरे बाएँ हाथ का खेल है। डाके में सारे गाँव को काले पानी भेजवा सकता हूँ। इस धोखे में न रहना।`[३]

भोला के यहाँ से दूसरे दिन होरी के घर में गाय आनेवाली है। रात भर होरी को नींद नहीं आती। वह गाय को नाँद गाडने के बारे में सोच रहा है। वह सोचता है अगर बाहर नाँद गाडेगा तो कारिन्दा को नजराना देना पडेगा --

`और बाहर नाँद भी कौन गाडने देगा ? कारिन्दा साहब नजर के लिए मुँह फुलाएँगे। छोटी-छोटी बात के लिए रायसाहब के पास फरियाद ले जाना भी उचित नहीं। और कारिन्दों के सामने मेरी सुनता कौन है ? उनसे कुछ कहूँ, तो कारिन्दा दुश्मन हो जाय। जल में रहकर मगर से बैर करना लडकपन है।`[४]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१५५- सरस्वती प्रेस, २।४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१८८,वाणी प्रकाशन, ६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७, प्रथम संस्करण - १९८२

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९८ - सरस्वती प्रेस, २।४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -२

४ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२४ - सरस्वती प्रेस, २। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

` नोखेराम जमींदार का बड़ा दुष्ट कारिन्दा है जो होरी जैसे किसानों से लगान वसूली में बेइमानी करता है। होरी व्दारा लगान चुका देने पर भी दुबारा लगान का दावा करता था, क्योंकि धूर्तता के कारण वह किसानों को रसीद नहीं दिया करता था।`[१]

जमींदार भी इसी तरह अपने कारकून को भेजकर रुपया वसूल करते है --

` पटेश्वरी सरकारी कर्मचारी कम हैं, महाजन अधिक। नोखेराम कारकुन का वेतन तो दस रुपये से ज्यादा न था, पर एक हजार साल की ऊपर की आमदनी थी।`[२]

` गोदान` में रायसाहब अमरपाल सिंह अपने कारकुन नोखेराम को रुपया वसूल करने भेजते हैं --

` सहसा एक दिन बादल उठे और आसाढ का पहला दौंगड़ा गिरा। किसान खरीफ बोने के लिए हल लेकर निकले कि रायसाहब के कारकुन ने कहला भेजा, जब तक बाकी चुक न जायगी, किसी को खेत में हल न ले जाने दिया जायगा। किसानों पर जैसे वज्रपात हो गया। और कभी तो इतनी कडाई न होती थी, अब की यह कैसा हुक्म। कोई गाँव छोड़कर भागा थोडा ही जाता है, अगर खेतों में हल न चले, तो रुपए कहाँ से आ जायँगे ? निकालेंगे तो खेत ही से। सब मिलकर कारकुन के पास जाकर रोए। कारकुन का नाम था पण्डित नोखेराम। आदमी बुरे न थे, मगर मालिक का हुक्म था। उसे कौन टाले।`[३]

प्रेमचंदजी ने` गोदान` में अंतिम पृष्ठों में सरकारी कर्मचारियों का वर्णन सार रुप में किया है। नौकर किस प्रकार सामान्य लोगों को चूसते हैं यह रामसेवक

---

१ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६५,ओम प्रकाशन, ३० बी,केवल पार्क एक्स्टेंशन,आजादपुर,दिल्ली-३३, प्र.सं.१९८७.

२ ओम प्रकाश शर्मा - प्रकाश : पच्चीस उपन्यास: नाटकीयता के निकष पर - पृ.१२,पांडुलिपि प्रकाशन,ई-११।५, कृष्ण नगर,दिल्ली-५१,प्रथम संस्करण-१९८७

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.८६ - सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

नामक पात्र के मुख से कहलवाया है —

' थाना-पुलिस, कचहरी-अदालत सब हैं हमारी रक्षा के लिए, लेकिन रक्षा कोई नहीं करता । चारों तरफ लूट है । जो गरीब है, बेकस है, उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं । भगवान न करे, कोई बेईमानी न करे । यह बड़ा पाप है, लेकिन अपने हक और न्याय के लिए न लड़ना उससे भी बड़ा पाप है । तुम्ही सोचो, आदमी कहाँ तक दबे ? यहाँ तो जो किसान है, वह सब का नरम चारा है । पटवारी को नजराना और कारिन्दों का पेट न भरे तो निबाह न हो । थानेदार और कानिसिटिबिल तो जैसे उसके दामाद हैं । जब उनका दौरा गाँव में हो जाय, किसानों का धरम है, वह उनका आदर-सत्कार करें, नजर-नयाज दें, नहीं एक रिपोर्ट में गाँव का गाँव बँध जाय ।'[१]

' गाँवों में पंचायती राज हट गया । किसानों को चूसनेवाले न जाने कितने, रायसाहब, सहुआइनें, दातादीन, मातादीन जैसे पण्डित, पटवारी, दारोगा थे ।'[२]

इस प्रकार प्रेमचंदजी ने 'गोदान' में अन्य प्रमुख ग्राम समस्याओं के साथ नौकरशाही समस्या को भी उजागर किया है । परंतु 'गोदान' के किसान जितने सरकारी नौकरों को जानते हैं उन्हीं का ही वर्णन किया गया है ।

पुलिस व्दारा शोषण —

' पूँजीपति और जमींदारों के अतिरिक्त प्रेमचंद ने ग्रामीण जन की दुर्व्यवस्था और आर्थिक विपन्नता का एक कारण उपर्युक्त दोनों वर्गों तथा सरकार के प्रतिनिधियों व्दारा किये गये शोषण को बताया है । जमींदारों के कारिन्दों और सरकारी कानूनगो, पटवारी और पुलिस अफसरों के व्दारा किसानों और मजदूरों का जो शोषण होता है उसका विस्तृत चित्रण प्रेमचंद ने अपनी विविध

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२९२ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.पीताम्बर सरोदे - आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना, पृ.६८, अतुल प्रकाशन, १०७। २९५ ब्रह्मनगर, कानपुर-१२, संस्करण - जून - १९८७

औपन्यासिक कृतियों में किया है। इसीलिए किसान और मजदूरों की थाना पुलिस और कचहरी अदालत में कोई आस्था नहीं रह गयी है।'[१]

'प्रेमचंद की रचनाओं में पुलिस का भी वर्णन मिलता है। पुलिस ब्रिटिश राज्य के आन्तरिक शत्रुओं का दमन करती है और न्याय-व्यवस्था लागू करती है। स्वाधीनता-आन्दोलन के इस युग में पुलिस दमन का दूसरा नाम था। राष्ट्रीय आन्दोलनकारियों को पुलिस की ज्यादतियों का सामना सबसे पहले करना पड़ता था। प्रेमचंद ने इस दृष्टि से भी पुलिस का वर्णन किया है।'[२]

केवल लड़ाई-झगड़े के समय ही पुलिस आती है और सताती है ऐसी बात नहीं तो सुख-समृध्दि के समय भी पुलिस अपने कार्य में सक्रीय रहती है। झूठे मुकद्दमें बनाकर अज्ञानी किसानों को फँसा देना पुलिस के लिए बाएँ हाथ का खेल है —

'फसल के समय पुलिस भी गाँव में जाकर झूठे-सच्चे डाकों की तहकीकात करती है और इस बहाने रिश्वत लेती है। रिश्वत लेना पुलिस विभाग में आम बात है।'[३]

होरी के घर में गाय आ गयी, यानी उसकी एक बहुत छोटी, पर आधारभूत मानवीय लालसा पूरी हो गयी। इतनी कठिनाईयों और शोषण चक्र के बीच खुशी का मौका आ गया। होरी की खुशी का वर्णन प्रेमचंदजी ने इस प्रकार किया है —

'होरी श्रध्दा विह्वल नेत्रों से गाय को देख रहा था, मानो साक्षात देवीजी ने घर में पदार्पण किया हो। आज भगवान ने यह दिन दिखाया कि उसका घर गऊ के चरणों से पवित्र हो गया। यह सौभाग्य! न जाने किसके पुण्य-प्रताप से।'[४]

---

१ प्रतापनारायण टंडन - प्रेमचंद - पृ.१०८, सामयिक प्रकाशन, ३५४३, जटवाडा दरियागंज, दिल्ली-६, संस्करण १९७८

२ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.१८७, वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७, प्र.सं.१९८२

३ - वही - प.१८८ - - वही —

४ प्रेमचंद - गोदान - पृ.३३ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

होरी के जीवन में यह प्रसन्नता के दिन अधिक समय तक नहीं रह पाते। होरी के भाई हीरा से एक दिन धनिया की कहा-सुनी हो गयी। हीरा ने चुपके से गाय को माहुर खिला दिया और गाय मर गयी। इसके बाद पुलिस आयी। यहाँ पुलिस की निरंकुशता की एक ही झलक दिखायी गयी है, इससे पुलिस की सामान्य कार्य-पध्दति का एहसास होता है --

' गोदान' में होरी की गाय मरती है और इस शुभ अवसर पर गाँव के पटवारी और मुखिया दारोगा जी के साथ मिलकर गरीब की सूखी हड्डियों में से रक्त निकालने की असफल चेष्टा करते हैं। होरी के घर की तलाशी का षड्यंत्र किया जाता है और नेताओं में सलाह होने लगती है कि दारोगा जी को क्या भेंट किया जाय।'[१]

गाँव के मुखिया और पुलिस के बीच रिश्वत के रुपयों का बँटवारा होनेवाला है, यह आम रिवाज है। थानेदार हीरा के घर की तलाशी लेना चाहता है और किसान तलाशी को बेइज्जती समझाता है --

' होरी के मुख का रंग ऐसा उठ गया था, जैसे देह का सारा रक्त सूख गया हो। तलासी उसके घर हुई तो, उसके भाई के घर हुई तो, एक ही बात है। हीरा अलग सही, पर दुनिया तो जानती है, वह उसका भाई है, मगर इस वक्त उसका कुछ बस नहीं। उसके पास रुपए होते, तो इसी वक्त पचास रुपए लाकर दारोगाजी के चरणों पर रख देता और कहता -- सरकार, मेरी इज्जत अब आपके हाँथ है। मगर उसके पास तो जहर खाने को भी एक पैसा नहीं है।'[२]

दारोगा जी और पटेसरी के बीच बातचीत होकर तीस रुपये रिश्वत लेकर मामला ठीक करना निश्चित हुआ। चार नेता थे, उनमें पाँच-पाँच रुपये बाँटकर लेना और दारोगाजी को दस रुपये की भेंट देना निश्चित किया। पटेसरी

---

१ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३३८
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९५ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-२

ने होरी को तीस रुपये सूद पर दिए और नेताओं के सामने रखे। इतने में धनिया आती है और इस मामले को अस्वीकार कर लेती है —

' नेताओं ने सारे रुपए चुनकर उठा लिए थे और दारोगाजी को वहाँ से चलने का इशारा कर रहे थे। धनिया ने एक ठोंकर और जमायी-जिसके रुपए हों, ले जाकर उसे दे दो। हमें किसी से उधार नहीं लेना है। और जो देना है, तो उसी से लेना। मैं दमडी भी नहीं दूँगी, चारे मुझे हाकिम के इजलास तक ही चढना पडे।'[१]

थानेदार को जब होरी से रुपये न मिले, तो उसने मुखियों को पकडा और पचास रुपये वसूल किये। मुखियों ने जब अनाकनी की तो थानेदार ने कहा —

' तुमने अभी अँधेर नहीं देखा। कहो तो वह भी दिखा दूँ ? एक-एक को पाँच-पाँच साल के लिए भेजवा दूँ। यह मेरे बाएँ हाथ का खेल है। डाके में सारे गाँव को काले पानी भेजवा सकता हूँ। इस धोखे में न रहना।'[२]

' प्रेमचंद की कृतियों में पुलिस-प्रशासन के जुल्म और अत्याचार के अनेक चित्र उपलब्ध हैं।' गोदान' में भी ब्रिटिश हुकूमत की रिश्वतखोर पुलिस-व्यवस्था की काली करतूतें प्रकाश में आयी हैं। निरीह गरीब जनता पर हुकूमत का रोब गालिब कर उनसे रुपए ऐंठना अँग्रेजी पुलिस-प्रशासन का सहज धर्म था। होरी अपने परिवार की मर्यादा बचाने के प्रयास में अपने भाई हीरा के घर की तलाशी नहीं लेने देता। किन्तु दारोगा होरी से पैसे ऐंठने की गरज से तलाशी लेना ही चाहता है। गाँव के पंच भी अन्यायी पुलिस का साथ देते हैं। अपनी किमती इज्जत बचाने के लिए होरी ने रुपए उधार लेकर दारोगा को देने की कोशिश की, किन्तु धनिया के सशक्त व्यक्तित्व ने सारी स्थिति पर काबू पा लिया और होरी शोषण से बाल-बाल बचा।'[३]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९७ - सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९८ - - वही -

३ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६८ आम प्रकाशन,३०-बी,केक्ल पार्क एक्स्टेंशन, आजादपुर,दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण - १९८७

कभी-कभी जमींदार से मिलकर पुलिस जमींदार विरोधी किसानों को झूठे मुकदमें में फँसाकर जेल भिजवाती है, उनका शोषण करती है —

` साम्राज्यवादियों के स्वार्थ भी उससे पूरी तरह जुडे हुए हैं, उनके नौकरशाह तथा पुलिस आदि सभी इस शोषण की प्रक्रिया में शामिल हैं। गांवों के भीतर जमींदार के कारिन्दे हैं, चपरासी हैं।`[१]

पुलिस की इस तरह की करतूतों के कारण ही भारतीय किसान पुलिस सिपाही से अत्यधिक डरता है। ` गोदान ` में जब होरी के गाय की मृत्यु पर थानेदार गाँव आता है तो सारा गाँव एकट्ठा होता है। होरी थानेदार के सामने खडा है लेकिन वह भी भयभीत दशा में है —

` जो कुछ कसर रह गयी थी, वह संध्या समय इलाके के थानेदार ने आकर पूरी कर दी। गाँव के चौकीदार ने इस घटना की रपट की, जैसा उसका कर्तव्य था, और थानेदार साहब भला, अपने कर्तव्य से कब चूकनेवाले थे ? अब गाँववालों को भी उनका सेवा-सत्कार करके अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। दातादीन, झिंगुरीसिंह, नोखेराम, उनके चारों प्यादे, मंगरु साह और लाला पटेश्वरी, सभी आ पहुँचे और दारोगाजी के सामने हाथ बाँधकर खडे हो गए। होरी की तलबी हुई। जीवन में यह पहला अवसर था कि वह दारोगा के सामने आया। ऐसा डर रहा था, जैसे फाँसी हो जाएगी। धनिया को पीटते समय उसका एक-एक अंग फडक रहा था। दारोगा के सामने कछुए की भाँति भीतर सिमटा जाता था।`[२]

` प्रेमचंदजी के समय की पुलिस के संबंध में हम डॉ. कमला गुप्ता के विचारों से सहमत है कि —

---

१ सम्पादक - डॉ. कुँवरपाल सिंह सव्यसाची - प्रेमचंद और जनवादी - साहित्य की परंपरा, ६७, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली-६३, प्रथम आवृति - १९८१

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९४, सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

' पुलिस सामन्तों की राजदार बन गयी दोनों ने पारस्परिक हितों की रक्षा का मानों समझौता कर लिया । भोग-विलास, वैभव,भ्रष्टाचार,अनाचार जो कुछ भी किया, जीवन को सम्मिलित रूप से भोगा । जब दोनों के ही हित समान हों तो कौन किसकी कहे । किन्तु पुलिस और सामंती साँठगाँठ के दो पाटों के बीच जनता को पिसना पड़ा । कानून का विधाता और रक्षक जब दोनों ही एक हो जायें तो अन्याय को कौन रोके । फलत: दलितों और शोषितों के हितों की रक्षक पुलिस भक्षक बन बैठी ।'[१]

मानवी मूल्यों का विघटन —

' हिन्दी के सामाजिक उपन्यासकार समाज में मानव मूल्यों की टूटन से पीड़ित है । उसने समाज में ऐसी स्थिति से साक्षात्कार किया है जहाँ सर्वत्र घृणा द्वेष और हिंसा का राज्य है । व्यक्ति-व्यक्ति का शत्रु बन गया है एवं स्वार्थ ही सर्वोपरि बन गया है । प्रेमचंदजी ने सामाजिक मूल्यों के इस विघटन को भली भाँति पहचाना और अपने उपन्यासों में इस विघटनकारी स्थिति का यथार्थ चित्र अंकित किया है । साथ ही स्थिति के सुधार के लिए आदर्शवादी मार्ग का संकेत किया है । उनके उपन्यासों में सर्वत्र एक ही संदेश है कि जिस समाज में गरीबों के लिए स्थान नहीं,वह उस घर की तरह है जिसकी बुनियाद न हो । मानवता हमेशा कुचली नहीं जा सकती । समता जीवन का तत्व है । यही वह दशा है जो समाज को स्थिर रख सकती है ।'[२]

प्रेमचंदजी ने दिखाया है कि नयी व्यवस्था के दबाव से मानवी मूल्यों का विघटन होता जाता रहा है । बल्कि किसान मानवी मूल्यों की रक्षा करने का प्रयास भी कर रहा है । इन मानवी मूल्यों की रक्षा करने में कभी वह सफल

---

१ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३३५
अभिनव प्रकाशन, २१-ए,दरियागंज,नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

२ डॉ.कमला गुप्ता - पृ.२५८ - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद -
अभिनव प्रकाशन,२१-ए,दरियागंज,नई दिल्ली-२,
प्रथम संस्करण - १९७९

होता है कभी असफल होता है। मानवी मूल्यों को बचाने किसान अपनी सामर्थ्य और इच्छा शक्ति के बलपर सफल होता है --

' अगर हमारा अंतर प्रेम की ज्योति से प्रकाशित हो और सेवा का आदर्श हमारे सामने हो तो ऐसी कोई कठिनाई नहीं जिस पर हम विजय न प्राप्त कर सकें।'[१]

परंतु नयी समाज रचना के कारण असफल होता है--

' इस सभ्यता के विकास के साथ मानवीय मूल्यों में जो परिवर्तन हुए, उसने भारतीय जीवन की उदारता, सहिष्णुता, मैत्री, भ्रातृत्व, प्रेम, करुणा आदि उदात्त मूल्यों को ध्वस्त कर दिया, जो मानवता की एक बडी क्षति मानी गयी।'[२]

नयी समाज रचना में परिवार विघटन तेजी के साथ हो रहा है। फिर भी किसान अपने पहले सम्बन्धों को मानता है, उसका निर्वाह करता है। मानवी मूल्यों को जतन कर रखना चाहता है। चेतना के स्तर पर उसे निबाहना चाहता है। प्रेमचंदजी ने जिस समय 'गोदान' की रचना की उस समय मानवी मूल्यों का विघटन तीव्र गति से हो रहा था --

' यांत्रिकता, संशय, भ्रष्टाचार और असंतोष की व्यापकता के साथ ही आस्थाओं को टूटते, विश्वासों को बिखरते और सम्बन्धों को छिटकते देखा है - इन पीडाओं के संत्रास से उसकी आत्मा झनझना उठी है -- और आज हम देखते हैं कि देश की सम्पूर्ण मानसिकता में तनाव, आतंक और विश्वासहीनता समा गई है। बडे-बडे महानगरों की भीड में आदमी अकेला है।'[३]

---

१ डॉ.कलावती प्रकाश - महासमरोतर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन - पृ.२९, श्याम प्रकाशन, फिल्म कलोनी, जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

२ डॉ.राजेन्द्र पंजियार - हिन्दी कथा साहित्य पूर्व परिच्छेद - पृ.१२८ अंकुर प्रकाशन, १। ३०१७, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२, प्रथम संस्करण - १९८५

३ डॉ.ज्ञान अस्थाना - हिन्दी कथा साहित्य समकालीन सन्दर्भ - पृ.४४ जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा-२, प्रथम संस्करण - १९८१

मानवी सम्बन्धों के ताने-बाने,तनाव-संघर्ष, आंतरिक विरोध की अभिव्यक्ति 'गोदान' में हुयी है। मानवी मूल्य अनेक सम्बन्धों पर आधारित होते हैं। परिवार के सदस्यों में आंतरिक स्नेह होता है। मनुष्यता के नाते जितनी मानवीयता अन्य लोगों के प्रति होती है उससे कई गुणा अधिक परिवार के सदस्यों के प्रति होती है। संयुक्त परिवार अगर टूट जाता है तो साथ ही यह मानवीयता भी टूट जाती है। इस टूटने के दर्द को किसान पात्र झेलते हैं। मानवीयता में जब विभेद आ जाता है तो परिवार का मुखिया इस असहाय अमानवीयता के कारण उस दिन खाना नहीं खाता। 'गोदान' का होरी भी अलगौझे बाद खाना नहीं खाता --

' क्या अभी सबेरा है जो ऊख गोडने चले ? सूरज देखता माथे पर आ गए। नहाने-धोने जाव। रोटी तैयार है।

होरी ने झुन्नाकर कहा - मुझे भूख नहीं है '

धनिया ने जले पर नोन छिडका-हाँ, काहे को भूख लगेगी। भाई ने बडे-बडे लड्डू खिला दिये हैं न।'[१]

इसका कारण कदाचित यह भी दिखाया है कि परिवार में नयी बहू पर ज्यादा अत्याचार होते हैं। इसलिए जब अवसर हाथ आता है तो नयी बहू सभी के प्रति विद्रोह करती है। इसीकारण भी मानवी मूल्यों का विघटन हो रहा है। किसान स्वार्थी होता है। मामूली बातों में भी वह स्वार्थ दिखलाता है। 'गोदान' में होरी के भाई अलग हो जाते हैं। होरी दमडी बँसोर से बाँझ बेचता है लेकिन उसमें पाँच रुपये वह दबाता है। होरी के मन से भी मानवीयता कम हो गयी है --

' इधर तुमसे रुपए मिलेंगे, उधर दोनों भाईयों को बाँट दूँगा। चार दिन की जिंदगी में क्यों किसी-से छल-कपट करूँ ? नहीं कह दूँ कि बीस रुपए सैकडें में बेचे है तो उन्हें क्या पता लगेगा। तुम उनसे कहने थोडे ही जाओगे। तुम्हें मैंने बराबर अपना भाई समझा है।

व्यवहार में हम 'भाई' के अर्थ का कितना ही दुरुपयोग करें, लेकिन उसकी भावना में जो पवित्रता है, वह हमारी कालिमा से कभी मलिन नहीं होती।'[२]

---

१ प्रेमचंद- गोदान - पृ.३०,सरस्वती प्रेस,३४३,अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२६ - - वही -

`गोदान` में होरी के भाई उससे अलग होते हैं, तो उनमें तथा उनकी बहुओं के मनसे होरी के प्रति मानवीय भाव कम हो जाता है। साथ ही आत्मीयता,आदर भाव, लज्जा समाप्त हो जाती है। होरी बाँस बेचता है और दमडी बँसोर उसे काटने लगता है तो हीरा बहु पुनिया बिना लज्जीत हुए अमानवीयता का व्यवहार उसके साथ करती है --

` समीप आकर चौधरी का हाथ पकडने की चेष्टा करती हुअी बोली - आदमी को क्यों भेज दूँ ? जो कुछ कहना हो, मुझसे कहो न ? मैं ने कह दिया, मेरे बाँस न कटेंगे।`[१]

होरी के भाई उससे अलग हो जाते हैं। हीरा होरी की गाय को जहर देता है। उसे लगता है हमारे पैसे दबाकर अब गाय ली जा रही है। इसीकारण वह ईर्ष्या-द्वेष से जलता है और अमानवीय व्यवहार करता है। सच ही यह देखकर लगता है कि मानवीय मूल्यों का विघटन हो रहा है --

` समाज का बाह्य चकाचौंधवाला स्वरूप सच्चा नहीं है, उसके भीतर सिसकती मानवता का वयनीय स्वरूप अपनी आर्त पुकार से समाज की सच्चाई को उघाडने का प्रयत्न कर रहा है। ईमानदारी के भाषण मंचों पर से देकर बेईमानी को अर्थ प्राप्ति का एकमात्र साधन मानना आज की सभ्यता की नंगी विभीषिका है। बेईमानी के अवलंबन के अभाव में जीवन-यापन करने वाला व्यक्ति आज भोला-भाला ही नहीं अपितु मूर्ख भी माना जाता रहा है। समाज की दृष्टि से वह उपकारक नहीं है और परिवार में उसे आदर नहीं।`[२]

प्रेमचंदजी ने यह दिखाया है कि बच्चों में बडों से ज्यादा मानवीयता होती है। किसान पति-पत्नि में संघर्ष होता है लेकिन दोनों में एकता,सहयोग तथा आत्मिय भाव अधिक मात्रा में होता है। `गोदान` में होरी और हीरा अपनी पत्नियों को पीटते हैं लेकिन तुरंत पति-पत्नियों में एकता स्थापित हो जाती है। साथ-साथ जीवन बिताने के कारण आत्मिय सम्बन्ध दृढ होता है। इसका

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२६- सरस्वती प्रेस,३४३,बंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.पीताम्बर सरोदे - आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना - पृ.६२-६३,अतुल प्रकाशन,१०७ २९८ ब्रह्मनगर,कानपुर-१२,संस्करण-जून-१९८७

अच्छा उदाहरण प्रेमचंदजी ने इन पात्रों के माध्यम से दिया है।

पुत्र के बडे हो जाने पर और उसके विवाहबध्द हो जाने पर उसके मनमें घरके सदस्यों के प्रति मानवीय भाव कम होता जाता है। `गोदान` में गोबर जब शहर जाता है तो उसकी व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ बढती हैं। इसी समय माता-पिता के प्रति जो पहले का आत्मिय भाव था वह कम हो जाता है। `गोदान` में एक स्थान पर इसी तरह के भाव गोबर व्दारा व्यक्त होते हैं --

` पालने में तुम्हारा क्या लगा ? जब तक बच्चा था, दूध पिला दिया। फिर लावारिश की तरह छोड दिया। जो सबने खाया, वही मैंने खाया। मेरे लिए दूध नहीं आता था, मक्खन नहीं बँधा था। और तुम भी चाहती हो, और दादा भी चाहते हैं कि मैं सारा कर्जा चुकाऊँ, लगान दूँ, लडकियों का ब्याह करूँ। जैसे मेरी जिन्दगी तुम्हारा देना भरने के लिए है। मेरे भी तो बाल-बच्चे हैं ?`[१]

किसानों में ईर्ष्या और व्देष की मात्रा भी अधिक होती है। किसी किसान का विकास होता देखकर दूसरे के मन में व्देष भी बढता है। संकट के समय उसे सहायता करने की अपेक्षा गिराने की चिंता लगी रहती है। `गोदान` में होरी के गाय को हीरा व्दारा जहर देने पर सभी उसे और गिराने की सफल कोशिश करते हैं। होरी की दयनीय अवस्था होती है --

` उनका संवेदनशील हृदय मानव को दु:ख पाते देख हाहाकार करने लगता था। `गोदान` इसी मानवता के दु:ख का चित्रण है। प्रेमचंदजी की दृष्टि किसी महामानव की कल्पना में लीन न थी, वे तो साधारण मानव को ही अधिक आदरणीय, अधिक श्रेष्ठ मानते थे। यही प्रेमचंदजी का मानव धर्म है, मानवीयता है, मानवतावाद है।`[२]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१८८ - सरस्वती प्रेस, रा ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.कलावती प्रकाश : महासमरोतर हिन्दी उपन्यासों में जीवन -दर्शन पृ.२९, श्याम प्रकाशन, फिल्म कलोनी, जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

भोला होरी से गाय के रुपए माँगने आता है -- और उसे विवश देखकर उसके बैल खोल ले जाता है --

' झुनिया सास के पीछे-पीछे घर में चली गयी । उधर भोला ने जाकर दोनों बैलों को खूँटों से खोला और हाँकता हुआ घर चला, जैसे किसी नेवते में जाकर पूरियों के बदले जूते पड़े हों - अब करो खेती और बजाओ बंसी । मेरा अपमान करना चाहते हैं सब, न जाने कब का बैर निकाल रहे हैं, नहीं ऐसी लड़की को कौन भला आदमी अपने घर में रखेगा ? सबके सब बेसरम हो गए हैं । '[१]

अन्त में डॉ.कमला गुप्ता के शब्दों में कह सकते है कि --

' समाज का उच्चवर्ग ही इन मूल्यों की स्थापना करता है और वह स्वयं ही अपने स्वार्थों के निमित्त स्वयं व्यावहारिक जीवन में अपनी सांस्कृतिक स्थापनाओं का निषेध करता है । सम्पूर्ण समाज इस अन्तर्विरोधी प्रक्रिया से ग्रस्त रहता है । दर्शन तथा साहित्य में आदर्श, नैतिक मान्यताएँ एवं सांस्कृतिक मूल्य गढ़े जाते हैं लेकिन व्यावहारिक जीवन तथा समाज में उन्हीं आदर्शों , मान्यताओं तथा मूल्यों का विघटन दिखाई देता है । मध्यवर्ग की इन मूल्यों पर आस्था है । इन सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करके ही वह अपने स्वाभिमान की रक्षा करता है । यह उसके अस्तित्व के अवलम्ब है क्योंकि सांस्कृतिक धरातल पर ही उसे समाज का सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है । उच्च वर्ग अन्य क्षेत्रों में एकाधिकार करने की भाँति समाज तथा देश की संस्कृति पर एकाधिकार स्थापित करने की आकांक्षा रखता है । समाज का जो भी विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग है, उसकी स्थिति लगभग ऐसी ही है । एक ओर वह सांस्कृतिक नियंत्रण करना चाहता है तथा दूसरी ओर अपने स्वार्थों के लिए विध्वंस भी करता है । यही कारण है कि समाज के सभी आदर्श तथा मूल्य ढह जाते हैं । व्यक्ति तथा समाज के चारों ओर घुटन का वातावरण व्याप्त हो जाता है । '[२]

---

१ प्रेमचंद : गोदान - पृ.१३० - सरस्वती प्रेस,ए ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ. कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद - पृ.२५९-२६० अभिनव प्रकाशन,२१-ए,दरियागंज,नई दिल्ली-२ प्रथम संस्करण - १९७९

भ्रष्टाचार —

" प्रेमचंदजी हिन्दू समाज के उसी रूप से भली प्रकार परच गये थे जहाँ रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, अन्याय और अत्याचार का बोलबाला है।"[१]

भारतीय किसान के सामाजिक जीवन की अपनी अलग परंपरा रही है। भारतीय समाज व्यवस्था से उत्पन्न द्वंद्व, तनाव और संघर्ष की अभिव्यक्ति प्रेमचंद की रचनाओं में हुई है। किसान अपनी जीवन पध्दति के कारण परंपरागत रूपमें ही जीवन जीना चाहता है —

" वह वही कार्य करना चाहता है, जो अब तक होता आया है। उसे किसी नये कार्य को करने को बाप-दादों का नाम डूब जाने का खतरा लगता है। इसी कारण किसान पुराणपंथी होता है। लेकिन समकालीन समाज में (प्रेमचंदकालीन) उस पर आर्थिक दबाव इतने ज्यादा पड रहे हैं कि वह परंपराओं का पालन करने में अपने को असमर्थ पाता है, फलत: एक विशेष प्रकार का अपराध बोध और पराजय की चेतना उसके व्यक्तित्व का अंग बनती जाती है। होरी का चरित्र इस दृष्टि से दृष्टव्य है।"[२]

होरी अपने जीवन के अंतिम दिनों में आर्थिक कठिनाईयों के कारण अपनी छोटी पुत्री रूपा का विवाह दो सौ रुपये अधेड व्यक्ति रामसेवक से लेकर उससे कर देता है। आर्थिक संघर्ष और परंपरागत जीवन मूल्य का संघर्ष होरी के जीवन में प्रारंभ से अन्त तक देखने मिलता है। दो चार रुपयों के मोह में होरी दमडी बसोर से मिलकर साझे के बाँस सस्ते में बेचने के लिए तैयार हो जाता है —

---

१ डॉ.कलावती प्रकाश : महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन - पृ.२९, श्याम प्रकाशन, फिल्म कलोनी, जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

२ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१७-२१८ वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर, दिल्ली-७ प्रथम संस्करण १९८२

' चौधरी ने होरी का आसन पाकर चाबुक जमाया- हमारा तुम्हारा पुराना भाईचारा है, महतो, ऐसी बात है भला, लेकिन बात यह है कि ईमान आदमी बेचता है,तो किसी लालच से। बीस रुपए नहीं, मैं पंद्रह रुपए कहूँगा, लेकिन जो बीस रुपए के दाम लो।' [१]

' हीरा होरी की गाय को मारकर भाग जाता है। धनिया हीरा को सजा दिलवाना चाहती है। थानेदार गाँव में तहकीकात करने आता है और हीरा के घर की तलाशी लेना चाहता है। इसमें होरी अपने भाई का और इसलिए अपना अपमान महसूस करता है और तलाशी रुकवाने के लिए ३०।- रुपये रिश्वत देने के लिए राजी हो जाता है।' [२]

इसी अवसर पर गाँव के मुखिया भी अपना हाथ मार लेते हैं —

' दारोगाजी ने एक मिनट तक विचार करके कहा — तो फिर उसे सताने से क्या फायदा ? मैं ऐसों को नहीं सताता, जो आप ही मर रहे हों।

पटेश्वरी ने देखा, निशाना और आगे जा पड़ा। बोला - नहीं हुजूर ऐसा न कीजिए, नहीं फिर हम कहाँ जायँगे। हमारे पास दूसरी और कौनसी खेती है ?

तुम इलाके के पटवारी हो जी,कैसी बातें करते हो ?

जब ऐसा ही कोई अवसर आ जाता है, तो आपकी बदौलत हम भी कुछ पा जाते हैं, नहीं पटवारी को कौन पूछता है ?

अच्छा जाओ, तीस रुपए दीलवा दो,बीस रुपए हमारे, दस रुपए तुम्हारे।' [३]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२६,सरस्वती प्रेस,२।४३,अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२१८ वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७, प्रथम संस्करण - १९८२

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९६- सरस्वती प्रेस,२।४३,अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली-२

` मध्यम-वर्ग का पटवारी,मुखिया,कारिन्दा, बेईमानी, रिश्वतखोरी, अन्याय आदि अस्त्र-शस्त्रों से निम्न वर्ग का खून चूस रहा था ।`[१]

` गोदान` के मिल मालिक सन्ना ऊख तोलने में बेईमानी करते हैं

` शहरी पूँजीपति मि.सन्ना ने महाजनी कोठी खोल रखी है। बेलारी गाँव का झिंगुरी सिंह इसी शहरी महाजन का दलाल है। वह महाजनी और दलाली दोनों उपायों से किसानों का अर्थ शोषण करता है। ऊख की फसल आते ही अपने रुपये सूद सहित काट लेता है और सन्ना की मिल में ऊख जाती है - उसका मुनाफा वह अर्जित करता है। शहरी मिल मालिक नकली बटखरे रखकर ऊख तोलने में बेईमानी करते हैं। ये अपने मजदूरों का भी शोषण करते हैं।`[२]

जमींदार के कारिन्दे भी किसान के साथ बेईमानी का बर्ताव करते हैं —

` नोखेराम जमींदार का बड़ा दुष्ट कारिन्दा है जो होरी जैसे किसानों से लगान वसूली में बेईमानी करता है। होरी द्वारा लगान चुका देने पर भी दुबारा लगान का दावा करता था, क्योंकि धूर्तता के कारण वह किसानों को रसीद नहीं दिया करता था।`[३]

जमींदार भी अपनी शान जमाने के लिए किसानों से भिन्न-भिन्न प्रकार के जाल फैलाते हैं —

` पूँजीवाद और(उसकी सर्वोच्च अवस्था) साम्राज्यवाद जब सामंतवाद को क्षीण करके धन तथा मुनाफे के द्वारा शोषण करता है तो वह झूठ मानवतावाद का,बहानों का, शान-मान का सहारा लेकर घूस,बलात्कार,भोग,

---

१ डॉ.राजेंद्रकुमार शर्मा - प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण - पृ.१३२
प्रगति प्रकाशन,बैतुल बिल्डिंग,आगरा-२
प्रथम संस्करण - १९८४

२ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६७
ओम प्रकाशन,३०-बी,केवल पार्क एक्सटेंशन,
आजादपुर,दिल्ली-३३,प्रथम संस्करण - १९८७

३ डॉ.बदरी प्रसाद - प्रगतिवादी हिन्दी उपन्यास - पृ.६५
ओम प्रकाशन,३०-बी,केवल पार्क एक्सटेंशन,आजादपुर,
दिल्ली-३३, प्रथम संस्करण - १९८७

भ्रष्टाचार,व्यभिचार आदि के जाल फैलाता है।"[१]

गोबर झुनिया के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखता है और जब वह गर्भवती हो जाती है तो उसे अपने घर में छोड़कर शहर भाग जाता है। इसपर बिरादरी व्दारा उसपर सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज का जुर्माना लगाया जाता है।

दातादीन ब्राह्मण धर्म के नाम पर किसान को लूटता है। भारतीय जाति-व्यवस्था का आधार भी धार्मिक रहा है, उसमें भी ब्राह्मण श्रेष्ठ है की भावना काम करती है। दातादीन ने होरी को तीस रुपये कर्ज दिया था, वह अब ब्याज मिलाकर दो सौ रुपये हो गये। गोबर कानूनी ब्याज देना चाहता है। इसीसमय दातादीन होरी को धर्म के नाम से धमकाता है। इस पर होरी भयभीत हो दो सौ रुपये देने के लिए तैयार हो जाता है। इसतरह दातादीन ब्राह्मणत्व के माध्यम से भ्रष्टाचार करता है।

भ्रष्टाचार के लिए प्रेमचंदजी ने किसी एक व्यक्ति को जिम्मेदार नहीं ठहराया है, बल्कि शोषण के इस सम्पूर्ण व्यवस्था को जिम्मेदार ठहराया है। प्रेमचंदजी ने यह भी दिखाया है कि किसी भी कानून से किसानों की रक्षा नहीं हो सकती। महाजन झिंगुरी सिंह कानून की औकात बताते हुए कहता है --

"कानून और न्याय उसका है, जिसके पास पैसा हो कानून तो है कि महाजन किसी आसामी के साथ कड़ाई न करे, कोई जमींदार किसी काश्तकार के साथ सख्ती न करे, मगर होता क्या है। रोज ही देखते हो। जमींदार मुश्क बँधवा के पिटवाता है और महाजन लात और जूते से बात करता है। जो किसान मोटा है, उससे न जमींदार बोलता है, न महाजन। ऐसे आसामियों ने हम मिल जाते हैं और उनकी मदद से दूसरे आसामियों की गर्दन दबाते हैं। तुम्हारे ही ऊपर रायसाहब के पाँच सौ रुपए निकलते हैं, लेकिन नोखेराम में हैं उतनी हिम्मत कि

---

१ रमेश कुंतल मेघ : वाग्मी हो लो। पृ.७८
पंचशील प्रकाशन,फिल्म कलोनी,चौड़ा रास्ता,
जयपुर-३,प्रथम संस्करण - १९८४

तुमसे कुछ बोले ? वह जानते हैं, तुम से मेल करने ही में उनका हित है। आसामी में इतना बूता है कि रोज अदालत दौड़े ? सारा कारबार इसी तरह चला जायगा, जैसे चल रहा है। कचहरी-अदालत उसी के साथ है, जिसके पास पैसा है। हम लोगों को घबराने की कोई बात नहीं।'[१]

' गोदान' में रामसेवक इस भ्रष्टाचार की प्रकृति को स्पष्ट करता हुआ एक स्थान पर कहता है —

' थाना-पुलिस, कचहरी-अदालत सब हैं हमारी रक्षा के लिए, लेकिन रक्षा कोई नहीं करता। चारों तरफ लूट है। जो गरीब है, बेकस है, उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं। भगवान न करें, कोई बेइमानी करे। यह बड़ा पाप है, लेकिन अपने हक और न्याय के लिए न लड़ना उससे भी बड़ा पाप है। तुम्हीं सोचो, आदमी कहाँ तक दबे ? यहाँ तो जो किसान है, वह सब का नरम चारा है। पटवारी को नजराना और बस्तूरी न दे, तो गाँव में रहना मुश्किल। जमींदार के चपरासी और कारिन्दों का पेट न भरे तो निबाह न हो। थानेदार और कानिसिटिबिल तो जैसे उसके दामाद है।'[२]

अन्त में हम निम्न शब्दों में कह सकते हैं —

' किसान आज भी जमीन से बेदखल होकर न्याय की गुहार लगा रहा है, अदालतें,कानून,थाना,कचहरी,धर्म,आज भी ताकतवर का हथियार बने हुए हैं।'[३]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०५ - सरस्वती प्रेस, २। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२९२ - सरस्वती प्रेस, २। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ सम्पादन : डॉ. कुँवरपाल सिंह। सव्यसाची : प्रेमचंद और जनवादी साहित्य की परंपरा,- पृ.४६, भाषा प्रकाशन,नई दिल्ली-६२, प्रथम आवृति - १९८१

नारी समस्या --

' गोदान ' में विविध समस्याएँ हैं, जिनकी परिधि अत्यंत व्यापक है। प्रेमचंदजी ने अपने इस उपन्यास में यद्यपि भारतीय ग्राम जीवन को महत्व अवश्य दिया है, परंतु अपने समकालीन जीवन के अनेक विध पहलों को स्पर्श करने का लोभ भी नहीं छोड सके और उन्होंने बडी कुशलता से इस उपन्यास में जीवन का अत्यंत विशाल चित्र कलात्मकता से उभारा है।

समाज में नारी का अपना विशेष स्थान है। ' गोदान ' में युग नारी का चित्र बड़े सुंदर रूपसे चित्रित हुआ है। युग की नारी शिक्षिता है। वह विवाह को रोग समझती है। जीवन में पूर्ण स्वतंत्रता उसका ध्येय हो गया है। लेखक झुनिया के मुँह से मयद्दू काश्मीरी की लडकियों का हाल सुनाकर युग-नारी के स्वरूप की प्रतिष्ठा कर देते हैं। फिर मालती के रूप में नवयुग की प्रतिमा पाठक के सम्मुख आ जाती है। मेहता भी इस युग - नारी के स्वरूप पर स्थान स्थान पर संकेत करता है। शिकार प्रसंग में वह कहता है --

' नए युग की देवियों की यही सिफत है। वह मर्द का आश्रय नहीं चाहतीं, उससे कंधा मिलाकर चलना चाहती है। '[१]

शिक्षा ने युग-नारी को पुरुषत्व की भावना से ओत-प्रोत कर दिया है। वह पुरुष के कार्य-क्षेत्र में प्रविष्ट होकर उसका अनुसरण करना चाहती है। पुरुष की भाँति वह भी ऐसे जीवन के लिए लालायित हो रही है जिसमें संग्राम, कलह, हिंसा की प्रधानता है। वह अपनी विद्या से, शक्ति से वही उपयोग लेना चाहती है जो पुरुष लेता है। वह पुरुष के समान अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष में निरत है। वह वोट देने का अधिकार प्राप्त करना चाहती है। मेहता अपने भाषण में इसी संघर्ष पर अपनी तीव्र आलोचना करता है --

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.६६ - सरस्वती प्रेस, २ । ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

` आपकी विद्या और आपका अधिकार हिंसा और विध्वंस में नहीं, सृष्टि और पालन में है। क्या आप समझती हैं, वोटों से मानव जाति का उध्दार होगा, या दफ्तरों में और अदालतों में जबान और कलम चलाने से ? इस नकली, अप्राकृतिक, विनाशकारी अधिकारों के लिए आप वह अधिकार छोड देना चाहती हैं, जो आपको प्रकृति ने दिये हैं ?`[१]

नवयुग की नारी पश्चिम की नारी का अन्धानुकरण कर रही है। वह गृहस्वामिनी नहीं बनना चाहती। भोग की प्रचण्ड लालसा ने उसे विलासिनी बना दिया है। विवाह को धार्मिक बंधन के रुप में स्वीकार करने को वह तैयार नहीं है। वह तो केवल प्रेम के आधारपर विवाह करना चाहती है। सरोज के मुख से लेखक ने यही भाव कहलवाये हैं —

सरोज की उक्ति में सामयिक नारी का हृदय उचकता प्रतीत होता है —

` हम पुरुषों से सलाह नहीं मांगती `। अगर वह अपने बारे में स्वतंत्र है, तो स्त्रियाँ भी अपने विषय में स्वतंत्र हैं। युवतियाँ अब विवाह को पेशा नहीं बनाना चाहतीं। वह केवल प्रेम के आधार पर विवाह करेंगी।`[२]

नवयुग की नारी का यह रुप ग्रामीण समाज में देखने को नहीं मिलता है। प्रेमचंदजी ने इस तथ्यपर भी प्रकाश डाल दिया है। मालती के चारित्रिक विकास-क्रम में लेखक उसे होरी के गाँव में ले जाता है और ग्रामीण नारी का सामयिक रुप भी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर देता है —

` भारतीय किसान पुरुष प्रधान समाज में रहता है, जिसमें नारी की भूमिका गौण होती है। फिर भी, मध्यवर्गीय नारी की अपेक्षा किसान की पत्नी की स्थिति ज्यादा बेहतर है। वह उत्पादन में सक्रिय हिस्सा लेती है और

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१३६ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१३८ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

इस कारण उसे घर के मामले में बोलने की स्वतंत्रता होती है। किसान संयुक्त परिवार में विश्वास करता है। प्रेमचंद की रचनाओं में दिखाया गया है कि नारी संयुक्त परिवार का विरोध करती है। विशेष रूप से नयी बहुएँ इस व्यवस्था में रहना पसंद नहीं करती।'[१]

प्रेमचंदजी ने नारी समस्या के हरेक पहलू का चित्रण किया है। इस सम्बन्ध में डॉ.कमला गुप्ता के विचार महत्वपूर्ण है --

' नारी को वह कन्या,पत्नी,माँ किसी भी रूपमें सुखी नहीं पाते। प्रत्येक अवस्था में पुरुष उसका शोषक बनकर उसे यातना पहुँचाता है। वैधव्य का अभिशाप उसे समाज की क्रूर यातनाओं का शिकार बनने के लिए विवश कर देता है। सधवा नारी की अपनी समस्याएँ हैं। इस नारी की पुकार भी प्रेमचंद ने सुनी है जो पति व्दारा प्रताड़ित है। परित्यक्ता नारी के लिए भी समाज उतना ही कठोर है। इस प्रकार नारी समस्या के प्रत्येक बिन्दु को प्रेमचंद ने उजागर किया है।'[२]

प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है --

' इस निष्ठुर समाज ने सेवा और त्याग की देवी नारी को भी दलित वर्ग के समकक्ष ला बिठाया है। युग-युग से पुरुष समाज व्दारा पीड़ित नारी-जीवन की विभिन्न दशाओं और समस्याओं का चित्रण कर उनको सही जीवन - दृष्टि प्रदान करना ही प्रेमचंद साहित्य का प्रमुख उद्देश्य रहा है।'[३]

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२२७,वाणी प्रकाशन, ६१-एफ,कमलानगर, दिल्ली-७,प्रथम संस्करण - १९८२

२ डॉ. कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.२५५ अभिनव प्रकाशन,२१-एफ,दरियागंज,नई दिल्ली-२, प्रथम संस्करण - १९७९

३ डॉ.कलावती प्रकाश - महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन, पृ.२९ - श्याम प्रकाशन,फिल्म कलोनी,जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

नारी पुरुष के इच्छानुसार चलनेवाली दासी है। इसीकारण नारी का हमेशा शोषण हुआ है। आर्थिक परतंत्रता के कारण नारी का शोषण होता आया है। हिन्दी के अनेक उपन्यासों में नारी शोषण और उसकी समस्या के अनेक रुप दिखायी देते है --

' नारी की स्वतंत्र कोई सता नहीं वह पुरुष की भाव-भंगिमा पर नृत्य करनेवाली उसकी क्रीत दासी है। पुरुष वर्ग की इस सामन्ती मनोवृत्ति के कारण उसे पग-पग पर अपना अपमान और अत्याचार सहना पडा। नारी - शोषण के मूल्य में उसकी आर्थिक परतंत्रता मूल कारण रही। पुरुष ने उसे लुभावनी ऊँची पदवियों से विभूषित कर, उसे घर की चहार दीवारी में बंद करके रखा और पति-भक्ति से सम्बन्धित उसके कर्तव्यों की बागडोर उसके हाथों में थमा दी, जिसे थामकर वह जीवन की लम्बी डगर पर पुरुष के पीछे-पीछे घिसटती रही।'[१]

स्त्री को शारीरिक यातना देने का अधिकार तो पति को बहुत ही सहज मिल जाता है। सीधा-सादा होरी भी धनिया को पीट देता है। मारपीट के इस दृश्य का वर्णन प्रेमचंदजी ने किया है --

' होरी धनिया को मार रहा था। धनिया उसे गालियाँ दे रही थी। दोनों लडकियाँ बाप के पावों से लिपटी चिल्ला रही थीं, और गोबर माँ को बचा रहा था। बार-बार होरी का हाथ पकडकर पीछे ढकेल देता, पर ज्योही धनिया के मुँह से कोई गाली निकल जाती, होरी अपने हाथ छुडाकर उसे दो-चार घूँसे और लात जमा देता। उसका बूढा क्रोध जैसे किसी गुप्त संचित शक्ति को निकाल लाया हो। सारे गाँव में हलचल पड गई। लोग समझाने के बहाने तमाशा देखने आ पहुँचे।'[२]

---

१ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.२८४
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.९२ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-२

किसान परिवारों में ऐसी स्थिति का होना साधारण बात थी। साधारण बातों को लेकर स्त्री को कष्ट दिये जाते है। प्रेमचंदजी ने अपने साहित्य में नारी को यथार्थवादी दिखलाया है। प्रेमचंदजी ने नारी के दर्द का खूब चित्रण किया है। 'गोदान' में सास-बहू के झगडे का भी चित्रण मिलता है, उसे प्रेमचंदजी ने नारियों का अज्ञान माना है। ऐसे अवसर पर पुरुष की स्थिति विचित्र हो जाती है, वे दोनों नारियों को बारी बारी से समझा देते है।

अन्त में हम इस विचार को सार रुपमें रखते है कि --

' प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में नारी जीवन के हर पहलू को चित्रित किया है। उनके जीवन की प्रत्येक समस्या, उनके चरित्र का प्रत्येक पक्ष में,उनमें विद्यमान साहस,त्याग, सेवा,करुणा, दृढता एवं संयम जैसे उच्च मानवीय गुणों के साथ - साथ ईर्ष्या-द्वेष,आभूषण प्रियता,रुढिवादिता, धर्म भीरुता, अंध-विश्वास जैसी दुर्बलताओं को भी चित्रित किया है। नारी जीवन के अँधेरे पक्षों के उद्घाटन को प्रेमचंद केवल स्त्री-पुरुष के व्यक्ति परक सम्बन्धों तक सीमित नहीं रखते अपितु उसे तत्कालीन राष्ट्रीय जागरण और स्वाधीनता संघर्ष से जोडकर बृहद आयाम देते हैं।'[१]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि --

' प्रेमचंद युग के उपन्यासों में नारी मुख्य रुपसे अबला ही थी। प्रेमचंद युग के उतरार्ध में मालती जैसी आधुनिक नारी के दर्शन होते हैं, पर ऐसी नारियों की संख्या बहुत कम थी।'[२]

---

१ संपादन - डॉ.कुँवरपाल सिंह - सव्यसाची : प्रेमचंद और जनवादी साहित्य की परंपरा - पृ.१५२,माया प्रकाशन, नई दिल्ली-६३,प्रथम आवृति - १९८१

२ डॉ.हेमराज 'निर्मम' - हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग - पृ.५९ विभू प्रकाशन,साहिबाबाद-५,प्रथम संस्करण - अगस्त - १९७८

विवाह समस्या --

' पति-पत्नी के संबंध परिवार के प्राण होते हैं। विवाह इन सम्बन्धों की पहली शर्त है। इस दृष्टिकोण से प्रेमचंद विवाह को नारी-पुरुष का पवित्र, अटूट-बंधन मानते हैं, जिसका अंत किसी एक की मृत्यु के पश्चात भी असंभव है।'[१]

पुरुष-नारी के विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों, विशेष रूप से विवाह व दाम्पत्य जीवन पर भी प्रेमचंदजी ने अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किये है। प्रेमचंदजी स्पष्ट कहते है --

' विवाह को मैं एक सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोडने का अधिकार न पुरुष को है न स्त्री को।'[१]

प्राचीन परंपराओं से चली आ रही विवाह प्रथा, का जो आज स्वरूप है उसी का वर्णन प्रेमचंदजी ने अधिक रुचि दिखाकर नहीं किया --

' ग्रामीण किसान के लिए शादी सिर्फ सेक्स सम्बन्ध का नैतिक रूप ही नहीं है, बल्कि एक धार्मिक कर्तव्य है। इसके अलावा किसान के लिए शादी आर्थिक कारणोंसे भी अनिवार्य है।'[३]

' परिवार का मुखिया सभी बच्चों के शादी-ब्याह के लिए भी जिम्मेदार होता है। पिता या घर का मुखिया ही बच्चों के लिए योग्य जीवन साथी चुनता है। इस प्रक्रिया में वह लडके या लडकी की राय जानना आवश्यक नहीं समझता। अपनी पहुँच के हिसाब से सगाई कर देता है।'[४]

---

१ डॉ.राजेन्द्रकुमार शर्मा - प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण - पृ.१३९- प्रगति प्रकाशन बेतुल बिल्डिंग,आगरा-३, प्र.सं.- १९८४

२ डॉ.कलावती प्रकाश : महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन - पृ.३० ,श्याम प्रकाशन,फिल्म कलोनी,जयपुर-३, प्र.सं.- १९८७

३ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३१ वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७, प्र.सं.- १९८२

४ डॉ.रामबक्ष - प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३१,वाणी प्रकाशन, ६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७, प्र.सं.- १९८२

' प्रेमचंद काल में वर और कन्या के अभिभावक ही विवाह निश्चित करते थे। विवाह के उद्देश्य को ही भुला दिया गया था।'[१]

' विभिन्न वैवाहिक समस्याओं के साथ ही प्रेमचंद ने स्त्री-पुरुष के स्वच्छंद प्रेम की समस्या पर भी विचार किया है। उनकी यह धारणा है कि विवाह से पूर्व पति-पत्नी का एक दूसरे से परिचय और उनकी रुचि की जानकारी आवश्यक है। माता-पिता के व्दारा जो विवाह तय किये जाते है, वे आदर्श भले ही हों, पर उनका व्यावहारिक पक्ष अत्यंत असंतोषजनक है, क्योंकि उसके उपरान्त किसी प्रकार का कोई विकल्प शेष नहीं रह जाता।'[२]

किसानों में विवाह के सम्बन्ध में यह ध्यान दिया जाता है कि विवाह एक ही जाति में हो। कई बार किसी लड़के के विवाह में बहुत कठिनाई होती है तो उसकी उम्र भी ढलने लगती है। दातादीन का पुत्र मातादीन सिलिया को रखैल की तरह रखे हुए है उसी कारण उसके विवाह होने में समस्या निर्माण हो गयी है।

आर्थिक कठिनाई के कारण विवाह समस्या उग्र रुप धारण करती है। आर्थिक दबावों से पीड़ित होकर किसान कई बार अपनी लड़की को बेच भी देता है। होरी ने दो सौ रुपये लेकर रुपा का विवाह अधेड़ रामसेवक से कर दिया --

' आज उसके ऐसे दिन आ गए हैं कि उससे लड़की बेचने की बात कही जाती है और उसमें इनकार करने का साहस नहीं है। ग्वालिन से उसका सिर झुक गया।'[३]

---

१ प्रा.मा.ए.गवली : प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का अनुशीलन - पृ.३१ - अन्नपूर्णा प्रकाशन, १२७। ११०० डब्ल्यू वन,साकेतनगर,कानपुर-१४, प्रथम संस्करण - १९८५

२ प्रतापनारायण टंडन - प्रेमचंद - पृ.११५ - सामयिक प्रकाशन,३५४३, जटवाडा दरियागंज, दिल्ली-६,संस्करण-१९७८

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९० - सरस्वती प्रेस, २। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

किसान परिवारों में बच्चों की सगाई बचपन में कर दी जाती है। होरी की पुत्री सोना की सगाई बचपन में की थी। अब जब सोना की आयु सत्रह साल की हो गयी होरी को उसके विवाह की चिंता लगी है।

बाल - विवाह -

' इस युग में बाल-विवाह का प्रचलन था जिसकी परिणति प्राय: बाल-विधवा में हुआ करती है। प्रेमचंद स्वयं बाल-विधवा से विवाह कर एक बालिका का उध्दार करने में समर्थ हुए थे, अत: इस समस्या के समस्त पहलुओं पर उन्होंने विचारा है।'[१]

' विवाह की किसानों में अनेक प्रथाएँ हैं। बाल-विवाह यहाँ एक आम स्थिति है। छोटी उम्र में ही किसान बच्चों की शादी कर देता है।'[२]

बाल-विवाह एक प्राचीन रीति है। प्रेमचंदजी के पूर्व तथा उसी समय इस विवाह प्रथा को खूब बल मिला। इसी कारण भी नारी का शोषण हुआ। छोटी कन्याओं का विवाह करना इसीकारण धार्मिक दृष्टिकोण से उचित माना जाने लगा। बाल-विवाह प्रथा के पीछे समाज में व्याप्त अनैतिकता महत्वपूर्ण कारण हो सकता है। छोटी आयु में विवाह करने के कारण कन्याएँ अनेक विसंगतियों का शिकार बनी। युवावस्था में उस कन्या का स्वीकार उसका पति नहीं करता —

' इसलिए प्रेमचंदजी ने अनमेल विवाह और बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं का विरोध करके नारी को भी अपना जीवन संगी चुनने की स्वतंत्रता देने की वकालत की थी। क्योंकि वे जानते थे कि पुरुष को स्त्री पसंद न आयी तो वह शादियाँ

---

१ डॉ.कलावती प्रकाश : महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन-दर्शन
पृ.२९, श्याम प्रकाशन, फिल्म कलोनी, जयपुर-३
प्रथम संस्करण - १९८७

२ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३३
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ, कमलानगर दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

कर सकता है। स्त्री को पुरुष पसंद न आया, तो उसकी सारी उम्र रोते ही गुजरेगी।'[१]

जब कन्या बडी हो जाती है तो उससे पहले उसे वैधव्य प्राप्त हो जाता है, वर पति के नाम से भी परिचित नहीं हो पाती —

' बाल-विवाह भी वैधव्य का एक कारण है। एक बार विधवा होते के बाद कुलीन घर की स्त्रियों के लिए दूसरा विवाह धर्म-विरुध्द माना जाता था। परिणामस्वरुप विधवाओं को आजीवन पराश्रय में रहना पडता था।'[२]

' बच्चों की सगाई और शादी तो अक्सर बचपन में ही हो जाती है। बच्चे जब जवान होते हैं, तभी उनका गोना किया जाता है और तभी दुल्हा-दुल्हन मिल सकते है। ' गोदान' में होरी ने सोना की सगाई बचपन में ही कर दी थी और गोबर की सगाई करने की चिंता उसे सता रही थी।'[३]

सामान्यत: किसानों में बाल-विवाह कोई समस्या नहीं होती। जोड के लडके - लडकियाँ आसानी से उन्हें मिल जाते हैं। होरी की पुत्री सोना सत्रहवें साल में थी और इस साल उसका विवाह करना आवश्यक था। होरी दो साल से इस चिंता में था। इस चिंता का यह भी कारण है कि —

' दशहरे की छुट्टियों के दिन थे। झिंगुरी, पटेश्वरी और नोखेराम तीनों ही सज्जनों के लडके छुट्टियों में घर आये थे। तीनों अंग्रेजी पढते थे और यद्यपि तीनों बीस-बीस साल के हो गये थे, पर अभी तक युनिवर्सिटी में जाने का नाम न लेते थे। एक-एक क्लास में दो-दो, तीन-तीन साल पडे रहते। तीनों की शादियाँ हो चुकी थीं। पटेश्वरी के सपूत बिन्देसरी तो एक पुत्र के पिता भी हो चुके थे।

---

१ संपादक : दयानंद पांडेय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि -पृ.९८ भावना प्रकाशन, दिल्ली-९२, प्रथम संस्करण - १९८२

२ सम्पादन : डॉ.कुँवरपाल सिंह - सव्यसायी : प्रेमचंद और जनवादी साहित्य की परंपरा - पृ.१५८। १५९, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली -६३, प्रथम आवृति-१९८१

३ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३२ वाणी प्रकाशन, ६१ एफ, कमलानगर, दिल्ली-७ प्रथम संस्करण - १९८२

तीनों दिन-भर ताश खेलते, भंग पीते और हुल्ला बने घूमते। वे दिन में कई-कई बार होरी के द्वार की ओर ताकते हुए निकलते और कुछ ऐसा संयोग था कि जिस वक्त वे निकलते, उसी वक्त सोना भी किसी-न-किसी काम से द्वार पर आ खड़ी होती। इन दिनों वह वही साड़ी पहनती थी, जो गोबर उसके लिए लाया था। यह सब तमाशा देख-देख कर होरी का खून सूखता जाता था, मानो उसकी खेती चौपट करने के लिए आकाश में ओले-वाले पीले बादल उठे चले आते हों।'[१]

अनमेल - विवाह --

सामंती व्यवस्था का एक भयंकर दोष अनमेल विवाह रहा है, जिसके कारण नारी-जाति का अत्यधिक शोषण हुआ। सामन्तों की विलासी प्रवृत्ति के कारण बहु-विवाह की परम्परा पनपती रही। एक व्यक्ति जहाँ एक के बाद अनेक विवाह करता है वहाँ वृध्द-विवाह की स्थिति भी उत्पन्न हुई। स्त्रियों की इच्छा - अनिच्छा का सामंती व्यवस्था में कोई मूल्य न था, मूल्य था सामंतों की वासना परितृप्ति का। इसके लिए कन्याओं को उनके गले से बाँध दिया गया। बहुत-सी कन्याएँ सामंती अहं की भेंट चढ कर आयीं, जिनसे विवाह के नाम पर पुरुष के आत्मिक सम्बन्ध न होकर मात्र प्रथा का निर्वाह ही प्रमुख रहा। उन्हें इच्छा के विरुध्द सामंतों को सौंप दिया गया क्योंकि ऐसा न करने से उनकी तथाकथित कुल मर्यादा पर आँच आती थी। कहीं निर्धनों की विवशता ने भी अनमेल विवाह के लिए मार्ग प्रशस्त किया। हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में इस सामन्ती प्रवृत्ति की अभिव्यंजना हुई है।'[२]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२१३ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ डॉ.कमला गुप्ता : हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३०९ अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२, प्रथम संस्करण - १९७९

` अनमेल विवाह भी भारतीय हिन्दू समाज के लिए अभिशाप सिध्द हुआ है।इसका मूल दहेज प्रथा में ढूँढा जा सकता है। यह प्रथा उस समय और भी दु:खदायी हो जाती है जब वह वृध्द हो और वधू युवती।`[१]

अनमेल विवाह का प्रमुख कारण सामान्य किसानों में यह दिखायी देता है कि उनकी आर्थिक दुर्दशा। धनाभाव के कारण बहुत से किसान ,मध्यवर्ग के लोग अनमेल विवाह करने के लिए तैयार हो जाते हैं —

` मध्यवर्गीय माँ-बाप कई बार धनाभाव के कारण अनमेल विवाह करने पर विवश हो जाते हैं।`[२]

इस अनमेल विवाह के मूल में दहेज प्रथा भी कारण बनी रही जिसके कारण अनेक परिवार समाप्त हो गये। कन्या के इच्छा के विरुध्द विवाह करा दिया जाता है नहीं तो उनकी कुल मर्यादा पर आँच आ जाती है —

` इच्छित दहेज न दे पाने के कारण लड़की के माता-पिता को अयोग्य वरों से अपने लड़कियों की शादी करनी पड़ती है अनमेल विवाह का मूल कारण यही है। सामान्यत: इस तरह के विवाहों में लड़की को कई तरह के कष्ट उठाने पड़ते हैं[३]।

` इस अनमेल विवाह के मूल में दहेज प्रथा भी कारण बनी रही जिसके कारण अनेक परिवार समाप्त हो गये।`[४]

---

१ डॉ.कलावती प्रकाश : महासमरोतर हिन्दी उपन्यासों में जीवन दर्शन- पृ.२९,श्याम प्रकाशन,फिल्म कलोनी,जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

२ डॉ.हेमराज ` निर्मम ` : हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग - पृ.६९ विभू प्रकाशन,साहिबाबाद-५,प्रथम संस्करण - अगस्त - १९७८

३ सम्पादन - डॉ.कुँवरपालसिंह - सव्यासाची : प्रेमचंद और जनवादी साहित्य की परम्परा - पृ.१५८,माणा प्रकाशन- नई दिल्ली-६३,प्रथम आवृति - १९८१

४ डॉ.कलम गुप्ता : हिन्दीउउपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३१० -अभिनव - प्रकाशन,२१-ए,दरियागंज,नई दिल्ली-२,प्र.सं.७९

धन और ऐश्वर्य के लोभ में माता-पिता अपनी लड़की बूढ़ों को देते हैं। और भाग्य की दुहाई देते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि विवाह के एक-दो वर्ष बाद पति की मृत्यु हो जाती है और पत्नी वैधव्य का जीवन जीती है। ऐसे अवसरों पर वह अवैध संबंध रखती है। इस प्रकार अनमेल विवाह अनेक प्रकार के अनाचारों और भ्रष्टाचारों को जन्म देते हैं।

अनमेल विवाह के कारण पति-पत्नी में आत्मिक सम्बन्ध भी दृढ़ नहीं होता जो सांसारिक जीवन में मूल माना जाता है —

' वे दोनों जिस विवाह सूत्र से बंधे हैं वह एक को स्वामी और दूसरे को सेवक नहीं बनाता बल्कि वह तो एक तरह का सामाजिक समझौता है जो परस्पर के अनुराग, सौहार्द और सेवा भावना से ही दृढ और चिर स्थायी हो सकता है। विवाह का उद्देश्य यही और केवल यही है कि स्त्री और पुरुष एक दूसरे की आत्मोन्नती का मुख्य साधन हो'[१]

' दाम्पत्य सम्बन्धों के विघटन का एक महत्वपूर्ण कारण अनमेल विवाह है।'[२]

' गोदान' का होरी सामन्ती व्यवस्था के अन्तर्गत आर्थिक विषमता का अभिशाप सहन कर लेता है। जिसके पास दो समय के भोजन की व्यवस्था नहीं, वह लडकियों का विवाह करने के लिए धन कहाँ से इकठ्ठा करे। दातादीन ब्राह्मण विवाह में बिचौलिये का काम करता है। दातादीन होरी की पुत्री रुपा के लिए अधेड व्यक्ति रामसेवक विवाह योग्य मानता है। इस सम्बन्ध में वह होरी से कहता है —

' मेरा जजमान है। बडा अच्छा जमाना है उसका। खेती अलग, लेन-देन अलग। ऐसे रोब दाब का आदमी ही नहीं देखा। कई महिने हुए उनकी औरत मर

---

१ संपादक - दयानंद पांडेय - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि - पृ.९८
भावना प्रकाशन दिल्ली-९२, प्रथम संस्करण १९८२

२ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३०७
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

गई है। सन्तान कोई नहीं। अगर रुपिया का ब्याह उससे करना चाहो, तो मैं उसे राजीकर लूँ। मेरी बात वह कभी नहीं टालेगा। लड़की सयानी हो गई है और जमाना बुरा है। कहीं कोई बात हो जाय, तो मुँह में कालिख लग जाय। यह बड़ा अच्छा अवसर है। लड़की का ब्याह भी हो जायगा और तुम्हारे खेत भी बच जायँगे। सारे खरच - बरच से बचे जाते हो।'[१]

दातादीन के कहने से होरी अपनी पुत्री रुपा का विवाह अधेड अवस्था के रामसेक से दो सौ रुपये लेकर कर देता है परंतु पहले सोच में इसतरह डूबा रहता है —

' रामसेक होरी से दो ही चार साल का छोटा था। ऐसे आदमी से रुपा के ब्याह करने का प्रस्ताव ही अपमान जनक था। कहाँ फूल-सी रुपा और कहाँ वह बूढा ठूँठ। जीवन में होरी ने बडी-बडी चोट सही थी, मगर यह चोट सबसे गहरी थी। आज उसके ऐसे दिन आ गए हैं कि उससे लड़की बेचने की बात कहीं जाती है और उसमें इनकार करने का साहस नहीं हैं। ग्लानि से उसका सिर झुक गया।'[२]

इस अनमेल विवाह से प्रेमचंदजी ने समाज व्यवस्थापर सीधी चोट की है। घर की आर्थिक दुर्दशा के कारण कुण्ठित रुपा के लिए पैसा सबसे बडी चीज थी। अत: उसकी दृष्टि में पति की वृध्दावस्था का कोई मूल्य न था। इस प्रकार समाज व्यवस्था में अनमेल विवाह की कुप्रथा प्रचलित रही, जिसके कारण नारी का अत्यंत शोषण हुआ।

साधारण स्थितिवाले धनी वर्ग ने अपनी कन्या को उच्च कुल में देकर अपनी मान,प्रतिष्ठा,सम्मान बढाने के साथ ही लड़की को उच्च कुल में देने के गौरव

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९०- सरस्वती प्रेस,२।४३,अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२९० - सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

को प्राप्त किया। मानो कन्या का विवाह योग्य वर से न होकर उसके मान, प्रतिष्ठा और धन से हो रहा हो —

' गोदान' में सन्ना और गोविन्दी का जो मनोमालिन्य और क्लेशमय जीवन चित्रित किया गया है, वह भी अनेमल विवाह का ही दुष्परिणाम है।'[१]

विधवा - विवाह —

' एक बार विधवा होने के बाद कुलीन घर की स्त्रियों के लिए दूसरा विवाह धर्म विरुध्द माना जाता था। परिणाम स्वरुप विधवाओं को आजीवन पराश्रय में रहना पड़ता था। विधवा किसी प्रकार के सामाजिक और धार्मिक उत्सवों, तीज त्यौहारों में भाग नहीं ले सकती थी। किसी तरह का श्रृंगार न कर सकती थी, और सैर सपाटे नहीं कर सकती थी। अपनी हर तरह की इच्छाओं का दमन करना पड़ता था और सब की गुलामी करती हुई अपनी जिन्दगी की आहुती दे देनी पड़ती थी। प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में वैधव्य जीवन के इस त्रासद पक्ष का अत्यंत मार्मिक चित्र खिंचा है। स्वयं प्रेमचंद ने बाल-विधवा शिवरानी देवी से विवाह कर अपनी सहानुभूति को कर्म का ठोस आधार दिया हो'[२]

मध्यम-वर्गीय समाज में नारी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य विधवा हो जाना है। इसलिए प्रेमचंदजी की पैनी दृष्टि इस समस्या की ओर गयी। प्रेमचंदजी के समय विधवा-विवाह के लिए सुधारक और प्रचारक जनमत तैयार कर रहे थे। उस समय के कुछ शिक्षित व्यक्ति विधवाओं के उध्दार के लिए एक मार्ग आश्रमों की स्थापना समझाते थे। प्रेमचंदजी के ' प्रतिज्ञा ' उपन्यास का अन्त विधवा-विवाह में न होकर आश्रम की स्थापना से होता है —

---

१ प्रतापनारायण टंडन - प्रेमचंद - पृ.११६, सामयिक प्रकाशन, ३५४३, जटवाडा दरियागंज, दिल्ली-६, संस्करण -१९७८

२ सम्पादन : डॉ.कुँवरपाल सिंह - सव्यसायी : प्रेमचंद और जनवादी - साहित्य की परंपरा- पृ.१५९, माणा प्रकाशन, नई दिल्ली ६३, प्रथम आवृति - १९८१

` उन्होंने सर्वत्र बाल-विधवा विवाह का ही समर्थन किया है, वे प्रौढ विधवा विवाह करवा कर भारतीय नारी को उसके सतीत्व से गिराना नहीं चाहते थे।`[१]

भारतीय समाज में विधवा का जीवन अत्यंत कष्टपूर्ण रहा है और कुछ सीमा तक अब भी है। अधेड आयु में विधवा होनेवाली नारी को बाकी जीवन कुछ काम धंदा करके बिताना पडता है। उसी अवस्था में उसका विवाह होना बहुत ही कठिन होता है। विधवा होने पर कई नारियाँ अपने माँ-बाप के पास चली जाती हैं और घरेलु कामकाज में स्वयं को व्यस्त रखती हुई जीवन के भार को कम करती है। ` गोदान` में झुनिया पति के देहांत के बाद अपने पिता के पास आकर रहने लगती है —

` लडकी है झुनिया, वह भी नसीब की खोटी। तुम तो उसकी सगाई में आये थे। कितना अच्छा घरबार था। उसका आदमी बम्बई में दूध की दूकान करता था। उन दिनों वहाँ हिन्दू-मुसलमानों में दंगा हुआ, किसी ने उसके पेट में छूरा भोंक दिया। घर ही चौपट हो गया। वहाँ अब उसका निबाह नहीं। जाकर लिवा लाया कि दूसरी सगाई कर दूँगा, मगर वह राजी ही नहीं होती।`[२]

गोबर और झुनिया एक-दूसरे की ओर आकृष्ट होते हैं और परिणामत: झुनिया गर्भवती हो जाती है। इस अवस्था में गोबर उसे अपने घर छोडकर शहर भाग जाता है। होरी और धनिया उसे बहु रुपमें स्वीकार कर लेते है। प्रेमचंदजी ने यहाँ विधवा झुनिया का गोबर के साथ विवाह नहीं दिखालाया परंतु घर के लोगों व्दारा बहु रुपमें स्वीकार करते दिखलाया है —

` होरी ने झुककर उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए प्यार भरे स्वर में कहा — डर मत बेटी, डर मत। तेरा घर है, तेरा व्दार है,तेरे हम हैं। आराम से रह। जैसी तू मोला की बेटी, वैसे ही मेरी बेटी। जब तक हम जीते हैं, किसी बात

---

१ डॉ.कलावती प्रकाश : महासमरोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जीवन-दर्शन पृ.२९,श्याम प्रकाशन,फिल्म कलोनी,जयपुर-३, प्रथम संस्करण - १९८७

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२३ - सरस्वती प्रेस,२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

की चिंता मत कर। हमारे रहते, कोई तुझे तिरछी आँखों न देख सकेगा। मोज मात जो लगेगा, वह हम सब दे लेंगे, तू सातिर जमा रख।'[१]

धनिया भी मातादीन से स्पष्ट शब्दों में कहती है —

' हमको कुल-प्रतिसष्ठा इतनी प्यारी नहीं है महाराज, कि उसके पीछे एक जीव की हत्या कर डालते। ब्याहता न सही, पर उसकी बाँह तो पकडी है मेरे बेटे ने ही।'[२]

' गोदान' में प्रेमचंदजी ने विधवा नोहरी का विवाह मोला से होता दिखलाया है। विधवा नोहरी को एक लडका भी है, और मोला के भी पहले पत्नी के तीन लडके है। ऐसी स्थिति में नोहरी का विवाह मोला के साथ होता है —

' मोला उधर दूसरी सगाई लाए थे। औरत के बगैर उनका जीवन नीरस था। जब तक झुनिया थी, उन्हें हुक्का-पानी दे देती थी। समय से खाने बुला ले जाती थी। अब बेचारे अनाथ से हो गए थे। बहुओं को घर के काम-धाम से छुटी न मिलती थी। उनकी क्या सेवा सत्कार करती, इसलिए अब सगाई परमावश्यक हो गई थी। संयोग से एक जवान विधवा मिल गयी, जिसके पति का देहांत हुए केवल तीन महीने हुए थे। एक लडका भी था। मोला की लार टपक पडी। झटपट शिकार मार लाए। जब तक सगाई न हुई, उसका घर खोद डाला[३]।'

विधवाओं का विवाह हो जाने पर उनका जीवन सुखी हो जायेगा ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि विधवा जब विवाहोपरान्त नये घर में आती है। तो उसके सम्मुख अनेक समस्याएँ आती हैं। सौतन के बच्चे अगर हो तो उनका लालन-पालन ठीक ढंग से नहीं होता। आये दिन घर में लडाई झगडा रहता है। परंतु

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०३ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०५ - — वही —

३ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२१९ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

विधवा विवाहित होने पर उसे कोई बूरा नहीं कहता —

' वैसे प्रेमचंद ने दिखाया है कि विधवा अगर नैतिक रुप से विधवा का ही जीवन बिताये तो उसे लोग सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और यदि वह विवाह कर लेती है तो उसे कोई बूरा नहीं बताता । इस तरह प्रेमचंदजी ने दिखाया है कि किसानों में पुरुष और स्त्री दोनों को समान रुप से दूसरी शादी करने का अधिकार है ।'[१]

बहु - विवाह —

' हिन्दू समाज में धर्म से मान्यता न मिलने पर भी नारी को सांपत्तिक अधिकार न मिलने के कारण पैतृक सम्पति की रक्षा के लिए पुत्र की लालसा के नाम पर पुरुष को कई विवाह करने की छूट मिलती रही । वस्तुत: बहु-विवाह की प्रथा सामन्ती युग की विशिष्ट देन है । केवल पुत्र लालसा ही नहीं अन्य बहुत से कारण भी बहु-विवाह प्रथा के मूल में रहे हैं जिनमें सर्वप्रमुख कारण सामन्तों की भोग लिप्सा ही रही । सामन्त अपनी असीमित वासनापूर्ति के लिए एक के बाद, दूसरा,तीसरा, चौथा और अनेक विवाह करते रहे । सामंती व्यवस्था की समाप्ति पर भी यह कुप्रथा समाज में व्याप्त रही और सामाजिक जीवन का अभिशाप सिध्द हुई । इसने समाज में व्यभिचारों की अन्तहीन श्रृंखला का सृजन किया और नारी इस कुप्रथा की श्रृंखला में बुरीतरह जकड गयी । उच्च वर्ग ने कभी तृष्णा पूर्ति के लिए बहु-विवाह को प्रश्रय दिया तो कभी पुत्र प्राप्ति के लिए ।'[२]

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.
वाणी प्रकाशन, ६१ -एफ,कमलानगर, दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३१४
अभिनव प्रकाशन,२१-ए,दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

बहु-विवाह की प्रथा भी 'गोदान' के समाज में प्रचलित है। झिंगुरीसिंह ने तीन विवाह करवाये है। इसी प्रकार वृध्द-विवाह भी इस समाज में होते रहते हैं। भोला बुढापे में विवाह की बात सोचता है और नोहरी से विवाह बध्द होता है। होरी भी अपनी लड़की रुपा का विवाह बूढे रामसेवक से कर देता है।

'बहु-विवाह का प्रचलन भी कई जातियों में मिलता है।' गोदान' में झिंगुरी सिंह की तीन पत्नियाँ हैं।'[१]

'झिंगुरीसिंह दो स्त्रियों के पति थे। पहली स्त्री पाँच लड़के-लडकियाँ छोड़कर मरी थी। उस समय इनकी अवस्था पैंतालीस के लगभग थी, पर आपने दूसरा ब्याह किया और जब उससे कोई सन्तान न हुई, तो तीसरा ब्याह कर डाला। अब इनकी पचास की अवस्था थी और दो जवान पत्नियाँ घर में बैठी थीं। उन दोनों ही के विषय में तरह-तरह की बातें फैल रही थीं,पर ठाकुर साहब के डर से कोई कह न सकता था, और कहने का अवसर भी तो हो। पति की आड में सब कुछ जायज है। मुसीबत तो उसकी है, जिसे कोई आड नहीं। ठाकुर साहब स्त्रियों पर बडा कठोर शासन रखते थे और उन्हें घमंड था कि उनकी पत्नियों का घूँघट तक किसी ने न देखा होगा। मगर घूँघट की आड में क्या होता है, उसकी उन्हें क्या खबर ?' [२]

सामान्य किसानों में भी बहु विवाह की प्रथा है। किसानों के घर में सौत का प्रचलन सामान्य माना जाता है। यह पुरुष का अधिकार है और इसे कोई स्त्री रोक नहीं सकती। किसान भी पुत्र कामना से ही दूसरा विवाह करता है।

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३३,
वाणी प्रकाशन,६१ -एफ,कमलानगर,दिल्ली- ७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०७ - सरस्वती प्रेस,
२। ४३,अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-२

वह यह चाहते हैं कि घरमें दिया जलानेवाला, घर का उतराधिकारी होना चाहिए इसीकारण किसानोंमें भी बहु विवाह का प्रचलन चल पडा ।

दहेज - प्रथा —

समाज में ऐसी अनेक प्रथाएँ है जो प्राचीन काल से सामाजिक जीवन के साथ चिपकी हुअी है । समाज के धनी वर्ग ने इन प्रथाओं को आश्रय दिया, जिसका आधार धन तथा वैभव था —

` दहेज प्रथा भी ऐसी ही एक कुप्रथा है जो सामंत युग की विशिष्ट देन थी और आज भी समाज में व्यापक रुप से फैली हुअी है । कोई भी कुप्रथा अपने में ही पूर्ण नहीं होती वह अपने साथ कुप्रथाओं की एक श्रृंखला लेकर चलती है । अनमेल विवाह, बहु-विवाह आदि कुप्रथाएँ बहुत सीमा तक दहेज प्रथा से ही जुडी हुई हैं । हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में इस कुप्रथा के अनेक आयाम उद्घाटित हुए है ।[१]

विवाह की चिंता का कारण समाज तथा धनाभाव है । माँ-बाप समझाते हैं कि लडकी का विवाह उचित समय पर नहीं किया तो लोग संदेह व्यक्त करेंगे । कोई उंगली निर्देश करेगा । इसलिए उन्हें विवाह की चिन्ता लगी रहती है परंतु अर्थाभाव के कारण अनेक कठिनाईयाँ उपस्थित होती है —

` अर्थ से उत्पन्न समस्याओं में से एक है दहेज समस्या ।

..... स्पष्ट रुपसे इन्हें सामाजिक प्रश्न कहा जा सकता है । लेकिन हैं ये आर्थिक ही । अर्थ के केन्द्र बिन्दु के इर्दगिर्द घूमने वाले परिपथ पर ये प्रश्न सुलगते-अग्निकुंडों के समान धधक रहे हैं ।`[२]

---

१ डॉ.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३१८
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

२ डॉ.पीताम्बर सरोदे : आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना - पृ.६५
अतुल प्रकाशन, १०७ २९५ ब्रह्मनगर, कानपुर-१२
संस्करण जून - १९८७

ऐसे हालत में लड़की के माता-पिता योग्य वर ढूँढ कर मुँह माँगा दहेज देते हैं। केवल दहेज ही नहीं साथ ही अनेक प्रकार की वस्तुएँ देकर लड़केवालों को प्रसन्न करना पड़ता है।

` प्रेमचंदजी ने शिक्षित वर्ग पर बड़ा तीखा व्यंग्य किया है, क्योंकि उन्हें इस वर्ग से बड़ी आशाएँ थीं। जिस शिक्षित वर्ग से समाज के अन्य वर्ग उच्चादर्शों की माँग करते हैं, वही समाज के विभिन्न भ्रष्टाचारों का आश्रय स्थल है। केवल उसपर आधुनिकता तथा थोथी आदर्शवादिता की चमक है।` [१]

` गोदान` में होरी अपनी बड़ी पुत्री सोना का विवाह दहेज के रुपये न होने के कारण समय पर नहीं कर सकता। उसे पुत्री के विवाह की चिन्ता लगी रहती है। दोनों ही पति-पत्नी दहेज के रुपये न होने से सोच विचार में डूबे हैं —

` पर धनिया कहती थी, कितना ही हाथ बाँधकर खर्च करो, दो ढाई सौ लग ही जायँगे। झुनिया के आ जाने से बिरादरी में इन लोगों का स्थान कुछ हेठा हो गया था और बिना सौ दो सौ दिये कोई कुलीन वर न मिल सकता था।` [२]

होरी किसी तरह दुलारी सहुआइन से दो सौ रुपए सोना के विवाह के लिए कर्जा लेता है। सोना जानती है कि पहले ही पिता पर बहुत-सा कर्जा है अब अपने विवाह के कारण और कर्जा बढ़ाने वह तैयार नहीं है। इस सम्बन्ध में सोना सिलिया के साथ वार्तालाप करती है —

` सोना बोली - तूने कुछ सुना ? दादा सहुआईन से मेरी सगाई के लिए दो सौ रुपए उधार ले रहे है। सिलिया घर का रती-रती हाल जानती थी। बोली - घर में पैसा नहीं है, तो क्या करें ?

---

१ डॉ.कमला गुप्ता : हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३१८
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२१२ - सरस्वती प्रेस,
२। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-२

सोना ने सामने के काले वृक्षों की ओर ताकते हुए कहा —
मैं ऐसा नहीं करना चाहती, जिसमें माँ-बाप को कर्ज लेना पड़े। कहाँ से देंगे बेचारे, बता। पहले ही कर्ज के बोझ से दबे हुए हैं। दो सौ और ले लेंगे, तो बोझा और भारी होगा कि नहीं ?

` बिना दान-दहेज के बड़े आदमियों का कहीं ब्याह होता है पगली ? बिना दहेज के तो कोई बूढ़ा-ठेला ही मिलेगा। जायगी बूढ़े के साथ ?

` बूढ़े के साथ क्यों जाऊँ ? भैया बूढ़े थे जो झुनिया को ले आये ? उन्हें किसने के पैसे दहेज में दिये थे ?

` उसमें बाप-दादा का नाम डूबता है।`

` मैं तो सोनारी वालों से कह दूँगी, अगर तुमने एक पैसा भी दहेज लिया, तो मैं तुमसे ब्याह न करूँगी।`[१]

होरी की छोटी पुत्री रूपा का विवाह अधेड़ अवस्था के रामसेवक से होता है। रूपा और रामसेवक का अनमेल विवाह दहेज देने की असमर्थता के कारण ही होता है। दहेज देने की असमर्थता ने होरी को अपनी पुत्री का विवाह अधेड़ रामसेवक से करने बाध्य कर दिया।

इस प्रकार सामंत युगीन दहेज प्रथाने समाज में भ्रष्टाचार तथा अत्याचार को जन्म दिया। जो शोषित है उसका अधिक शोषण हुआ। प्रेमचंदजी ने इस कुप्रथा को पहचाना और इस कुप्रथा के पोषक समाज पर अपने उपन्यासों व्दारा तीखा व्यंग्य किया। समाज का उच्च कहलाने वाला धनी वर्ग तथा अशिक्षित ग्रामीण किसान वर्ग के प्रति प्रेमचंदजी का रोष अधिक फूट पड़ा। `गोदान` में प्रेमचंदजी ने दहेज की विकृतियों का यथार्थ चित्रण किया है।

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२१५ - २१६, सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

अवैध यौन सम्बन्ध —

' स्त्री पुरुषों के विवाहेतर सम्बन्धों में सदैव प्रेम के उच्च तथा अध्यात्मिक आदर्शों का पालन नहीं किया जा सकता। मनुष्य का मन बडा विचित्र और चंचल है। अत: स्त्री-पुरुषों का विवाह-बाह्य प्रेम उच्च आदर्शों से गिरकर कभी-कभी भौतिक स्तरपर आ पहुँचता है। यौन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्त्री-पुरुष एक दूसरे से विचित्र सम्बन्ध जोडने लगते है। जब विशुध्द आध्यात्मिक प्रेम भी समाज की दृष्टि में ग्राह्य नहीं माना जाता तब ऐसे भौतिक स्तर पर उतरे हुए प्रेम का समाज में निषेध किया जाता हो तो उसमें आश्चर्य नहीं माना जा सकता है। फिर भी मनुष्य की मानसिक और विशेषकर शारीरिक आवश्यकतायें उसे विवश कर देती हैं और स्त्री-पुरुष दोनों यौन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राय: लुक-छिपकर एक-दूसरे से सम्बन्ध जोडते हैं। कुछ पुरुष तथा स्त्रियाँ खुलकर इस प्रकार के सम्बन्ध जोडने का साहस दिखाते हैं। समाज के अनिवार्य अंग के रुपमें प्रेमचंद ने ऐसे सम्बन्धों का भी चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।'[१]

' सामन्ती व्यवस्था का आधार व्यक्ति स्वातंत्र्य न होकर उसका दमन एवं उस पर कठोर नियंत्रण था। कठोर नियंत्रण ने सदैव कुंठाओं को जन्म दिया है। व्यक्ति को सही दिशा निर्देश करने के स्थान पर अवैध मार्ग की ओर बढने के लिए प्रेरित किया है।'[२]

---

१ प्रा.मा.ए.गवली : प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का अनुशीलन - पृ.५९-६०,
अन्नपूर्णा प्रकाशन, १२७। ११०० डब्ल्यू वन,
साकेत नगर, कानपुर-१४
प्रथम संस्करण - १९८५

२ डॉ. कमलागुप्ता : हिन्दी उपन्यासों में सामंतवाद - पृ.३२४,
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-२
प्रथम संस्करण - १९७९

' प्रेमचंद ने गाँव जीवन में व्याप्त अनैतिक यौन सम्बन्धों का चित्रण भी किया है। होरी के शादी के बाद झिंगुरी सिंह आदि होरी के घर चक्कर काटा करते थे। नोखेराम के सम्बन्ध भोला की पत्नी नोहरी से थे और इसे भोला जानता भी था, लेकिन वह कुछ भी नहीं कर सकता था।'[१]

' भोला जानता था, नोहरी विरोध करेगी। इसका कारण भी वह कुछ-कुछ समझता था, कुछ देखता भी था, उसके यहाँ से भागने का एक कारण यह भी था। यहाँ उसकी तो कोई बात न पूछता था, पर नोहरी की बडी खातीर होती थी। प्यादे और शहने तक उसका दबाव मानते थे। उसका जवाब सुनकर भोला को क्रोध आया, लेकिन करता क्या ? नोहरी को छोडकर चले जाने का साहस उसमें होता, तो नोहरी भी झाड मारकर उसके पीछे-पीछे चली जाती। अकेली उसे यहाँ अपने आश्रम में रखने की हिम्मत नोखेराम में न थी। वह टट्टी की आड से शिकार खेलनेवाले जीव थे, मगर नोहरी भोला के स्वभाव से परिचित हो चुकी थी।'[२]

ग्रामीण जीवन में सर्वत्र अनैतिक यौन सम्बन्धों की काली छाया फैली हुई थी —

' मातादीन और सिलिया के सम्बन्धों की जानकारी तो सारे गाँव के लोगों को थी और इस कारण भी कई बार दातादीन को नीचे देखना पडता था और इसीकारण मातादीन की सगाई भी नहीं हो पा रही थी।'[३]

---

१ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३९
वाणी प्रकाशन,६१-एफ,कमलानगर,दिल्ली-७
प्रथम संस्करण - १९८२

२ प्रेमचंद : गोदान - पृ.२२१-२२२ ,सरस्वती प्रेस,२। ४३,
अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली-२

३ डॉ. रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३९
वाणी प्रकाशन,६१ - एफ,
कमलानगर,दिल्ली-७,
प्रथम संस्करण - १७९

' दातादीन का लड़का मातादीन एक चमारिन से फँसा हुआ था। इसे सारा गाँव जानता था, पर वह तिलक लगाता था, पोथी-पत्रे बाँचता था, कथा-भागवत कहता था, धर्म-संस्कार करता था। उसकी प्रतिष्ठा में जरा भी कमी न थी। वह नित्य स्नान पूजा करके अपने पापों का प्रायश्चित कर लेता था।'[१]

उच्च वर्ग का प्रेम केवल वासना तृप्ति है, दानिय है। मातादीन इसी उच्च वर्ग का प्रतीक है, वह सिलिया का मन और तन दोनों लेकर भी उसे कुछ भी देना नहीं चाहता। एक दिन जब वह मुठ्ठी भर अनाज देती है तो मातादीन उसका अपमान कहता है तो सिलिया इससे दु:खी हो जाती है और उसे वे दिन याद आ जाते हैं —

' उसे वह दिन याद आये - और अभी दो साल भी तो नहीं हुए - जब यही मातादीन उसके तलवे सहलाता था, जब उसने जनेऊ हाथ में लेकर कहा था - सिलिया, जब तक दम में दम है, तुझे ब्याहता की तरह रखूँगा, जब वह प्रेमातुर होकर हार में बाग में और नदी के तट परउसके पीछे-पीछे पागलों की भाँति फिरा करता था। और आज उस का यह निष्ठुर व्यवहार।'[२]

नयी शिक्षा प्राप्त नवयुवकों में यही रसिकता अधिक है —

' सोना के बड़ी हो जाने पर होरी में यह चिन्ता भी लगी रहती है। झुनिया ने गोबर को इसी तरह की एक कथा सुनायी थी। सामान्यत: ऐसी हरकतों को लोग अच्छा नहीं समझते थे और लोकमत का भय गाँव के लोगों को इस तरह की उच्छृंखलता से रोकता रहता है।'[३]

---

१ प्रेमचंद - गोदान - पृ.१०५ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

२ प्रेमचंद - गोदान - पृ.२०८ - सरस्वती प्रेस, २। ४३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२

३ डॉ.रामबक्ष : प्रेमचंद और भारतीय किसान - पृ.२३९ - वाणी प्रकाशन, ६१ एफ,कमलानगर,दिल्ली-७ प्रथम संस्करण - १९८२

इस प्रकार अनैतिक यौन सम्बन्धों की समस्या ग्रामीण जीवन में एक शाप के रूपमें रही है, जिसने समस्त समाज को ग्रस लिया है। साथ ही अनैतिक यौन सम्बन्धों ने अनेक नवीन समस्याओं को जन्म दिया है। अनेक संयुक्त परिवारों में टूटन का कारण यह समस्या ही रही है। आज भी यह समस्या समाज में व्याप्त है, तथा भ्रष्टाचार और अनाचार के नवीन अध्याय प्रस्तुत कर रही है।